अध्याय 11

सिर ढकना और प्रभु-भोज के विषय में निर्देश

सिर ढाँकना (11:1-16)

अध्याय 11 में सिर ढकने के विषय में दिए गए पौलुस के निर्देशों की तुलना में नए नियम में दिए गए कुछ पद व्याकुल कर देने वाले पद हैं। यह विषय कुरिन्थ में संस्कृति और धार्मिक वातावरण के प्रति विशेष चिन्ता का कारण रहा। ये प्रश्न नया नियम में कहीं और देखने को नहीं मिलते। कुरिन्थ के लोगों के प्रतिदिन के जीवन में ऐसे कार्य और रीतियाँ शामिल थीं जिन्हें दो हज़ार वर्ष निकल जाने के बाद भी पुनःनिर्मित करना कठिन है। कुरिन्थ एक अन्तर्राष्ट्रीय शहर था। पौलुस के समय से मात्र एक सौ वर्ष पूर्व ही रोमी निवासियों ने इसे बसाया था। यूनानी लोग बाज़ारों और पड़ोसी स्थानों में फैल गए और यहूदी उपस्थिति महत्वपूर्ण रुप से देखी जा सकती थी।

अपनी शिक्षाओं और परिवर्तन प्राप्त किए हुए लोगों के लिए कलीसिया, सभा स्थलों की ओर मुड़ गईं परन्तु इसमें एक स्वस्थ अन्यजाति अंश भी शामिल था। आराधना पाने के लिए यूनानी और रोमी ईश्वरों ने इस्राएल के परमेश्वर के साथ बराबरी की। साथ ही सम्राटों के परिवारों के कुछ समय पूर्व ही मृत सदस्यों की आराधना के लिए स्मारकों और मन्दिरों ने प्रसिद्धि प्राप्त की। विभिन्न प्रकार के धार्मिक मतों के कारण सामाजिक तनाव उत्पन्न हुआ परन्तु झगड़ों का एकमात्र कारण केवल यही नहीं था। कुरिन्थ शहर, अमीर और गरीब लोगों के बीच एक बड़ी दूरी बनाए हुए एक विश्वव्यापी शहर था। सिर ढकने के विषय में पौलुस के उपदेश को इस मिश्रित और जटिल संस्कृति की एक पृष्ठभूमि के विरोध में पढ़ा जाना चाहिए।

किसी भी कठिन पद की व्याख्या के लिए सन्दर्भ महत्वपूर्ण है; परन्तु कुरिन्थ में सिर ढकने के विषय में यह सामान्य से अधिक संकटपूर्ण है। क्या अध्याय 11 को 8:1 में आरम्भ हुई मूर्तिपूजा पर प्रश्न के एक विस्तृत भाग के रुप में लिया जाए अथवा यह 12:1 में आरम्भ होने वाली कलीसिया की आन्तरिक गतिविधि और आराधना पर नए प्रश्नों का परिचय देता है? “अब इस विषय में” नामक फ़ॉर्मुला: 8:1 और 12:1 के बीच देखने को नहीं मिलता, परन्तु ऐन्थोनी सी

थिसलटन ने यह तर्क दिया कि यह पत्री 11:2 में "मैं तुम्हें सराहता हूँ ..." शब्दों के साथ एक नई दिशा लेती है। उसका पुनरावलोकन इस प्रकार है: "... इन आयतों के पीछे एकता की विषय-वस्तु यह है कि [8:1-11:1] दुर्बल माने जाने वाले भाई के प्रति प्रेम में धीरज रखना है; साथ ही [11:2-14:40] एकत्रित हुए आराधना करने वाले समुदाय के सन्दर्भ में है कि उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार रखा जाए।"[1]

ऐसा सम्भव है कि कोई जन थिसलटन के साथ असहमति के साथ प्रत्युत्तर दे कि 8:1-11:1 की एकता की विषय-वस्तु, मूर्तिपूजा के प्रति सही मसीही प्रत्युत्तर दिया जाना है और 11:2-34 उस विषय-वस्तु को मण्डली में और आराधना के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी लिए चलती है। किसी मूर्ति के मन्दिर में माँस खाने के विरोध में प्रेरित के मना करने का कारण कोई कमज़ोर भाई हो सकता है। सम्भव है कि सिर का ढका जाना भी मूर्तिपूजा के साथ कुछ सम्बन्ध रखता हो।

रिचर्ड ई. ओस्टर, जुनियर, ने कुरिन्थ में विशेष धार्मिक वातावरण के कारण सिर ढकने के विषय में प्रश्न पर तर्क करने के लिए बहुत अधिक खोज प्रस्तुत की। उसने निष्कर्ष निकाला कि सिर ढकने और प्रभु भोज के विषय में पौलुस के उपदेश, अध्याय 8 से 10 तक मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदान के विषय में और अध्याय 12 से 14 में मण्डली के लोगों के व्यवहार के विषय में प्रश्नों के बीच एक उपयोगी स्थिति के अन्तर के रुप में सहायक है।[2]

पौलुस का उदाहरण (11:1)

[1]तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।

आयत 1. एक सामान्य सहमति के द्वारा बाइबल का वर्णन करने वाले लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह आयत सही प्रकार से अध्याय 10 से सम्बन्ध रखती है। मूर्तियों के मन्दिरों में मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदान में सहभागी होने के विषय में कलीसिया को उपदेश दिया। प्रेरित ने कुरिन्थ के मसीही लोगों से आग्रह किया कि परमेश्वर को महिमा देने में वे लोग उसकी **सी चाल चलें** और यहूदियों और अन्यजाति लोगों (देखें 4:16) के लिए ठोकर का कारण न बनें। इसी प्रकार उसने फ़िलिप्पी और थिस्सलुनीके में रहने वाले लोगों को भी प्रेरित किया (फ़िलिप्पियों 3:17; 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2 थिस्सलुनीकियों 3:9)।

पौलुस के निर्देश (11:2, 3)

[2]हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूँ कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो; और जो परम्पराएँ मैं ने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पालन करते हो। [3]परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

11:2-16 में पौलुस की बातचीत के आरम्भ के विषय में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। प्रथम, जैसा कि नया नियम में कहीं पर भी सिर ढकने के बारे में नहीं बताया गया है इसलिए प्रेरित, कुरिन्थ की कलीसिया से एक विशेष परिस्थिति के बारे में बात कर रहा होगा। दूसरा, 8:1 से आरम्भ करते हुए यह पत्र उन मसीहियों के विषय में है जो वहाँ की संस्कृति में कुछ निश्चित मूर्तिपूजक तत्व से चिपके रहने की परीक्षा के अन्तर्गत हैं। ऊपरी तौर से सिर ढकना उस समय अर्थ रखता था जिस समय में कुरिन्थ के मसीही लोग अन्यजाति परम्पराओं के साथ सम्बन्ध रखते थे।

कुरिन्थ में अन्य तत्वों ने सिर ढकने के बारे में सम्भावित रुप से अनेक गड़बड़ी में योगदान दिया होगा। सर्वप्रथम इस बात पर ध्यान दिया जाए कि कुरिन्थ के सामाजिक जीवन में यूनानी के स्थान पर रोमी नैतिकता फैली हुई थी। एक अन्य विचार यह है कि रोमी व्यवस्था के अनुसार पुरुष और स्त्री को ईश्वरों के सम्मुख आदर प्रस्तुत करने के लिए किसी प्रकार का एक वस्त्र सिर पर डालना होता था। इसी के साथ ही यहूदी परिस्थिति में सिर पर वस्त्र डालना एक समर्पण को दिखाता था। फिर भी अन्य विचार यह है कि धर्म के विषय में सब मामलों में परिवार में संपूर्ण अधिकार पति का अथवा पिता का था। अंततः हमें यह याद रखना चाहिए कि पुरुष और स्त्री सामान्यता धार्मिक अथवा जनसाधारण रुप से एकत्रित होने के किसी भी अवसर में मिश्रित नहीं होते थे।

कलीसिया की मंडलियों में फिर भी पुरुष और स्त्री मिश्रित थे जैसा कि अध्याय 14 स्पष्ट करता है। साथ ही वे लोग गुप्त घरों में एकत्रित होते थे और यह एक ऐसा स्थान होता था जो कि अनौपचारिकता की व्यवस्था दिखाता था। कुरिन्थ में सही सामाजिक मानदण्ड लागू करने पर और उसमें भी एक मिश्रित सामाजिक व्यवस्था में पुरुष और स्त्री के प्रति आदरणीय व्यवहार को नियमानुसार ठहराने की रीतियों पर कलीसिया की मंडलियों में मसीहियों ने गड़बड़ी और विघटन का अनुभव किया। मसीही विश्वास को अपनाने के परिणामस्वरुप तनाव उत्पन्न हो गया क्योंकि पुरुष और स्त्रियों ने परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित होने के समय समकालीन सामाजिक रीतियों को अपनाने का प्रयास किया। इस प्रकार के प्रश्न संवेदनशील थे और उन प्रश्नों में मज़बूत विचार शामिल थे।

आयत 2. जो बात प्रेरित, कुरिन्थ के लोगों को कहने जा रहा था उसके लिए जब उसने उन्हें तैयार किया उस समय वह यह भी जानता था कि उसके शब्दों को सुनने के पश्चात अनेक लोग उससे प्रसन्न नहीं होंगे। कलीसिया ने जो आदर उसके प्रति दिखाया उसके लिए उनकी सराहना करते हुए, आधारभूत बातों को उसने अपनी बात के विषय के रुप में चुना। पहले भी, सिर ढकने के प्रश्न उठे थे और अब कुरिन्थ के मसीही लोग उन बातों को **याद** कर रहे थे जो पौलुस ने उन्हें सिखाई थी। वे उन **परम्पराओं** को मानने के लिए उत्सुक थे जो उनसे उन तक पहुँचाई थी। किसी प्रकार की डाँट अथवा शिक्षा जिससे वे लोग उससे असहमत थे उसे उनके लिए सराहना के प्रकाश में देखा जाएगा।

पौलुस ने सिर ढकने के विचार-विमर्श पर परम्परागत वाक्यांश "अब इस विषय में," के साथ परिचय नहीं दिया परन्तु **अब मैं तुम्हें सराहता हूँ** का प्रयोग किया। अतः ये निर्देश ऊपरी तौर से 8:1 में परिचय के रुप में दिए गए: "अब मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में," की सामान्य श्रेणी में आता है। सिर ढकना सीधे तौर पर मूर्तियों के सामने बलि करने के साथ जुड़ा हुआ नहीं था परन्तु इस बात से था कि मूर्तिपूजा की संस्कृति में एक मसीही व्यक्ति को किस प्रकार जीना चाहिए। मसीहियों को चाहिए कि वे यह जानें कि इस प्रकार की व्यवस्था में वे कैसा व्यवहार करें। सम्भावित रुप से वे तीन लोग जिन्होंने कुरिन्थियों का पत्र पहुँचाया (16:17) उन्होंने सिर ढकने के विषय में पौलुस का ध्यान आकर्षित किया।

आयत 3. सिर के विषय में सही रुप से पौलुस का क्या अर्थ था यह इस आयत में विचार-विमर्श करने के लिए एक मुख्य समस्या के अन्तर्गत एक बिन्दू है। पहला, आधुनिक अंग्रेज़ी में, "सिर" सामान्य रुप से *ताकत अथवा अधिकार को नियन्त्रित करना* बताता है: किसी संघ का "सिर," निदेशक मंडल हो सकता है। दूसरा, कुछ लोगों ने कहा कि यह शब्द प्राचीन विश्व में इस प्रकार काम में नहीं लिया जाता था। "सिर," जैसा कि इस पर तर्क किया गया, यह *किसी स्त्रोत* के रुप में, जैसे कि, "नदि का स्त्रोत भाग" अथवा प्रधानता का एक स्थान, जैसे कि "कक्षा में प्रधान," के रुप में है। इस विषय में मसीह पर परमेश्वर के अधिकार का प्रश्न नहीं उठ रहा था और न ही महिलाओं पर पुरुष के अधिकार का प्रश्न उठ रहा था। इसके स्थान पर किसी स्थान की निश्चित प्राथमिकता के साथ इसका सम्बन्ध था। उदाहरण के लिए पहले पुरुष की रचना हुई और उसके बाद स्त्री की रचना हुई। इस विचार के अनुसार, पुरुष के अधिकार अथवा किसी महिला के समर्पण के स्थान पर सृष्टि में पुरुष की प्राथमिकता के चिन्ह के रुप में सिर ढकने के विषय में पौलुस का विषय कुछ अधिक अर्थ से भरा हुआ था।

ओस्टर ने यह तर्क दिया कि इस भाग में पौलुस के द्वारा "सिर" (κεφαλή, *किफ़ली)* शब्द का विशेष प्रयोग यह प्रदर्शित करता है कि उसने कुरिन्थ की परिस्थिति को सम्बोधित करने के लिए इस प्रकार की एक शब्दावली तैयार की। वह अपनी बात को आगे जारी रखते हुए बताता है,

> विशेष रुप से, पौलुस ने मसीह और प्रत्येक पुरुष के बीच सम्बन्ध बताने के लिए "सिर" *(किफ़ली)* शब्द का प्रयोग और कहीं पर भी नहीं किया है न ही कहीं और इसको बताने वाले साक्ष्य देखने को मिलते हैं।[3]

एक पृष्ठ फ़ुटनोट में उसने यह जोड़ा कि इफ़िसियों 5:21-33 पतियों और पत्नियों के बारे में है न कि पुरुष और पत्नी के बीच का एक अधिक सामान्य सम्बन्ध है। फिर भी कोई भी व्यक्ति यह विचार करेगा कि क्या ऐसा सम्भव है कि पति और पत्नी के सम्बन्ध को पूर्ण शुद्धता के साथ किसी पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से अलग किया जा सके। एक बार जब पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध स्पष्ट कर दिए जाते हैं तब इससे प्राप्त होने वाले निष्कर्ष निश्चित रुप से किसी पुरुष और स्त्री पर लागू किए

जा सकते हैं जिन्होंने आपस में विवाह किया है।

जब यह दावा किया गया कि "सिर" शब्द किसी प्रकार के अधिकार को नहीं बताता, तब इस पर प्रबल रुप से वाद-विवाद किया गया। कुछ विद्वान यह साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि यूनानी-रोमी जगत स्वयं के अधिकार के बारे में बताने के लिए सामान्य रुप से "सिर" शब्द का प्रयोग करता था, जैसे कि, एक सरकारी अधिकारी। जोसफ़ ए. फ़िज़मेयर ने LXX, फ़िलो और जोसेफ़स और अन्य स्त्रोतों से प्राप्त साक्ष्य की जाँच की। उसने यह निष्कर्ष निकाला कि "तरसुस के पौलुस जैसे यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदी लेखक ने यह मन रखा होगा कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में κεφαλή को किसी अन्य जन पर अधिकार अथवा सर्वोच्चता के अर्थ में 'सिर' के रुप में समझा जाए।"[4] कोई भी व्यक्ति यह मानना चाहेगा कि दिए गए सन्दर्भ में *किफ़ले* शब्द प्रधानता के स्थान को बता रहा है और यह निश्चयपूर्वक यह सुझाता है कि यह कभी-कभी अधिकार को बताता है।

यूनानी संस्कृति में पुरुषों और स्त्रियों के बीच बहुत कम ही सामाजिक सम्बन्ध देखने को मिलता था,[5] इस कारण कलीसियाई मंडली में उनका एक-साथ होना उनके लिए अजीब था (देखें 14:34)। निश्चित रुप से उनकी भूमिकाओं के बारे में भी प्रश्न रहे होंगे। इन प्रश्नों में कुछ प्रश्न, जैसे कि कलीसिया में प्रत्येक सदस्य पोषण करने में और सिखाने में किस प्रकार सहायता करेगा, जैसे प्रश्नों के साथ अधिकार और समर्पण के प्रश्न भी जुड़े हुए थे।

पौलुस का स्पष्टीकरण (11:4-16)

[4]जो पुरुष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। [5]परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है। [6]यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिए बाल कटाना या मुण्डन कराना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े। [7]हाँ, पुरुष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है। [8]क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है; [9]और पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई है। [10]इसी लिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे। [11]तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है। [12]क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं। [13]तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना शोभा देता है? [14]क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिए अपमान है। [15]परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे तो उसके लिए शोभा है, क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। [16]परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।

आयत 4. हो सकता है कि **प्रार्थना** करना पवित्र-आत्मा का एक विशेष वरदान हो या एक विशेष वरदान न हो परन्तु भविष्यद्वाणी करना पवित्र-आत्मा का एक विशेष वरदान है। पौलुस इन दो गतिविधियों के बारे में बता रहा है क्योंकि ये दोनों गतिविधियाँ उस समय होती हैं जब कलीसिया के लोग एकत्रित होते हैं।[6] हो सकता है कि **सिर ढाँके हुए** (शाब्दिक रुप से, "सिर के अनुसार होना") वाक्यांश लम्बे बाल के विषय में बता रहा हो, साथ ही बाद के सन्दर्भ यह स्पष्ट करते हैं कि पौलुस सिर ढकने के विषय में कह रहा था। प्रेरित ने बालों के द्वारा प्राकृतिक ढकाव के साथ एक बाहरी ढकाव का प्रयोग करते हुए अन्तर बताना चाहा। अगर किसी व्यक्ति के लम्बे बाल समस्या का कारण हों तो ऐसा लगता है कि पौलुस यह तर्क दे रहा था कि इस प्रकार का व्यक्ति आराधना करने के लिए सदैव के लिए अपने बाल कटवा ले। इस प्रकार की आवश्यकता पर विश्वास करना कठिन है। साथ ही वह एक महिला के बालों को उसके लिए "महिमा" (11:15) का कारण बताता है। एक महिला अपनी महिमा को क्यों ढके? बेन विदरिंगटन तृतीय के अनुसार,

> बाल (14 से आगे की आयतें) के विषय में पौलुस का तर्क अन्त में एक सहयोगी तर्क के रुप में लाया गया जो कि सिर ढकने का एक प्रकार का उदाहरण है ... यहाँ समस्या सिर ढकने की है।[7]

कुछ वर्तमान टिप्पियों के साथ पुरानी टिप्पणियों ने पुरुष के लिए सिर ढकने के विषय में पौलुस की टिप्पणी की व्याख्या करते हुए कहा कि उसने अलंकार विद्या को इसमें जोड़ा जिससे कि वह पुरुष पाठकों के साथ-साथ महिला पाठकों को भी सम्बोधित कर सके। इस सोच के अनुसार पौलुस पुरुषों के विषय में लापरवाह था कि वे अपने सिर पर क्या पहनते हैं; सिर ढकने के बारे में उसकी चिन्ता महिलाओं के लिए थी। ओस्टर ने यह प्रस्तुत किया कि इस प्रकार का पठन एक गलत विचार है। साहित्यिक और पुरातत्व साक्ष्य संकेत देते हैं कि अन्यजाति पूजन विधि के समय रोमी पुरुषों और स्त्रियों के लिए सिर ढकना सामान्य बात थी।[8] प्रेरित के लिए महत्वपूर्ण विषय यह था कि मसीही पुरुष सिर ढकने के बिन्दू को कैसे लागू करें।

मध्य-प्रथम शताब्दी में रोमी संस्कृति अपने चारों ओर एक सुरक्षित घेरा बनाए हुए थी। रोमी धार्मिक विधियों में आराधना करने वाले लोगों से यह अपेक्षा की जाती थी और उसमें भी मुख्य रुप से पुरुषों और स्त्रियों से भी, कि वे अपने ईश्वरों को समर्पित विधियों के समय अपने सिर के ढकाव को सिर पर और खींच लें। कुरिन्थ में रोमी विरासत से आए हुए मसीहियों ने ऊपरी तौर से "प्रार्थना करने के समय अथवा भविष्यद्वाणी," करते समय सिर ढकने की विधि को निरन्तर बनाए रखा। ओस्टर ने यह बनाए रखा कि पौलुस का ऐसा मानना था कि "आराधना के समय पुरुषों का सिर ढके रखना, 11.3 में प्रमाणित पुरुष 'प्रधानता' के प्रति विरोधात्मक था।"[9]

स्पष्ट रुप से, पौलुस इस बात की खोज कर रहा था कि मसीही मंडली में

पुरुषों के द्वारा सिर ढकने के अभ्यास में सुधार किया जा सके जिससे कि वे रोमी अभ्यास को छोड़ सकें। साथ ही पौलुस रोमी अथवा अन्य जाति की महिलाओं में भी सुधार लाना चाह रहा था, जो कि "प्रार्थना या भविष्यद्वाणी" करने के समय सिर नहीं ढकती थीं।

एवरेट्ट फ़र्गुसन ने कहा, "... बलिदान के बारे में महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों पर लागू होने वाली रोमी विधियों की सच्चाई इस विवरण को जटिल बना देती है।"[10] उसने लिखा,

> अगर हम 1 कुरिन्थियों 11 के सामाजिक सन्दर्भ का पुनर्निर्माण करना चाहते हैं तो हमें सम्भावित रुप से ऐसे मसीहियों की कलीसिया अथवा समूह की कल्पना करनी होगी जो कि इसके धनवान सदस्य (सदस्यों) अथवा सहानुभूति रखने वाले लोगों के घर (घरों) में एकत्रित किए गए। रीति के अनुसार घरों की महिलाएँ अपने घरों में मुक्त रुप से बोल सकती थी और बिना पर्दे के रह सकती थी। यहाँ पर परिस्थिति के विशेष चरित्र के कारण "जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो" (1 कुरिन्थियों 11:18), "यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो" (1 कुरिन्थियों 14:23), पौलुस जनसाधारण के एकत्रित होने पर सही पहनावे और व्यवहार पर निर्देश देता है।[11]

आयत 5. उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करने से एक महिला अपने सिर का अपमान करती है, वह ऊपरी तौर से उसका स्वयं का अक्षरशः सिर है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जिस प्रकार पौलुस ने 11:3 में उसके पति के लिए आलंकारिक रुप से "सिर" शब्द का प्रयोग किया उसी प्रकार वह 11:5 में कर रहा है।

पवित्र-आत्मा के प्रभाव के अन्तर्गत भविष्यद्वाणी की जाती थी। सम्भव है कि जो प्रार्थना करना पौलुस के मन में था वह भविष्यद्वाणी का एक भाग हो। पौलुस ऐसी महिला की गतिविधियों को रोकने का अनुमान नहीं लगाता जो कि पवित्र-आत्मा के प्रभाव के अन्तर्गत "प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी" कर रही हो; परन्तु इस प्रकार के मामले में भी उसने यह निर्देश दिया कि वह अपने सिर को इस प्रकार से ढके कि पुरुष और स्त्री के बीच सही सांस्कृतिक अन्तर की पहचान की जा सके (14:34, 35 पर टिप्पणी देखें)।

जनसाधारण में किसी मसीही महिला के सिर को नहीं ढकने के लिए पौलुस के विरोध का कारण यह था कि वह उपयुक्त रुप से अपनी यहूदी/फ़रीसी शिक्षा में जड़ पकड़े हुए था। जब एक यहूदी महिला का विवाह होता था तो उससे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह शिष्टता के कुछ विशेष नियमों का पालन करे:

> ... उससे यह अपेक्षा की जाती थी कि उसके बालों को बाँधे रखने के लिए कुछ ढकाव हो जो कि उसकी ठोढ़ी तक लम्बा हो। परम्परा के अनुसार वह उघाड़े सिर घर से बाहर न जाए। यह इतना लज्जाजनक था कि उसका पति उसे इसके आधार पर तलाक भी दे सकता था और उसे इसके लिए उस महिला से विवाह में लिया गया दहेज लौटाने की भी आवश्यकता नहीं होती।[12]

पुरुष और स्त्री का परमेश्वर के सम्मुख समान रुप से खड़े होने (गलातियों 3:28) का अर्थ यह नहीं था कि इन दोनों के बीच का सांस्कृतिक अन्तर भी हटा दिया गया। कुरिन्थ में एक मसीही महिला के द्वारा उघाड़े सिर प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करने का अर्थ यह था कि वह परम्परा, दिव्य प्रकाशन (1 कुरिन्थियों. 11:8, 9) और प्रकृति (11:14) पर आधारित वर्तमान सांस्कृतिक नियमों को ख़ुले रुप से अस्वीकार करने के द्वारा स्वयं का अनादर कर रही है।

पौलुस ने अपने तर्क को बल देने के लिए अतिश्योक्ति का प्रयोग किया। उसने यह प्रमाणित किया कि जो महिला बिना सिर ढके प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करती है **वह मुण्डी होने के बराबर है**। प्रेरित यहाँ पर निडर अलंकार का प्रयोग कर रहा था। एक मुण्डी होना लज्जाजनक था; परन्तु पौलुस यहाँ पर वेश्याओं के विषय में नहीं कह रहा है और न ही कोई साक्ष्य यह संकेत देता है कि कुरिन्थ में वेश्याएँ अपना सिर मुण्डाती थी।[13] "एक महिला का मुण्डी होना," डेविड ई. गार्लैंड कहते हैं, "एक अप्राकृतिक स्थिति है जो कि प्राकृतिक ढकाव को हटा देती है और किसी बात में बने रहने के लिए इस संस्कृति में यह कुछ अनादर का सूचक था।"[14] *पौलुस मात्र यह बता रहा था कि एक पुरुष अपना सिर न ढके जबकि एक महिला अपना सिर अवश्य ढके।*

आयत 6. जनसाधारण में सिर मुण्डाई हुई दिखाई देने वाली महिला को जनसाधारण में तुच्छ जाना जाए, इस बात पर बल देने वाले टीकाकारों का ध्यान अनावश्यक रुप से खींच लिया गया। पौलुस बालों की लम्बाई अथवा बालों की शैली को सम्बोधित नहीं कर रहा था। पुरुष और स्त्री के बालों की लम्बाई का प्रश्न एक उदाहरण है परन्तु मुख्य बिन्दू नहीं है। पौलुस ने प्रत्येक उस टिप्पणी के प्रति निवेदन किया जिसने उसके इस विचार को सहयोग दिया कि **यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटा ले**। जैसा कि लम्बे बाल पुरुष के लिए लज्जा का कारण थे परन्तु स्त्री के लिए महिमा का कारण थे (11:14, 15), इसके लिए यह सुझाव रखा गया कि सिर को ढकने से महिला के खड़े होने की पहचान की गई परन्तु इससे पुरुष के प्रति आदर भी कम कर दिया गया। हालांकि वर्तमान में ऐसा लगता है कि अनेक लोग पौलुस के तर्क से उलझन में पड़ जाते हैं परन्तु यहूदी और अन्यजाति पृष्ठभूमि से आने वाले कुरिन्थ के मसीहियों के लिए यह अर्थपूर्ण था क्योंकि यह उनके जीवन के अनुभव के अनुसार था।

उस समय महत्वपूर्ण प्रश्न यह था कि पुरुष और महिला के परस्पर सम्बन्धों में उचित चरण में अन्तर करने वाले सामाजिक नियमों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाए। महिलाओं के बाल लम्बे होना कोई समस्या का कारण नहीं था परन्तु यह पाठ्य संकेत देता है कि मसीही व्यक्ति को चाहिए कि वह सामाजिक नियमों के अन्तर्गत तब तक जीवन जीता रहे जब तक कि इस प्रकार के नियम अनैतिक अथवा अधार्मिक न हों। कुरिन्थ में सिर मुण्डाए हुए सिर और उघाड़े सिर पुरुष और स्त्री के बीच सामाजिक अन्तर के लिए एक अनादर को प्रस्तुत करते थे।

आयत 7. यह प्रस्तुत करते हुए कि महिलाएँ सिर ढकें और पुरुष सिर न ढकें,

जब प्रेरित ने सामाजिक नियमों के प्रति निवेदन किया तब वह प्रकाशितवाक्य 11:7 की ओर मुड़ गया। 11:3 में दिए गए बिन्दू को उसने विकसित किया: प्रत्येक मनुष्य का सिर मसीह है, स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है। प्रेरित ने यह तर्क दिया कि जो पुरुष प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करने के समय अपना सिर ढकता है वह परमेश्वर का अपमान करता है। सृष्टि की रचना के समय परमेश्वर ने पुरुष को अपने स्वरुप में बनाया (उत्पत्ति 1:26)। यह रचनात्मक कार्य परमेश्वर के साथ पुरुष के सम्बन्ध को परिभाषित करता है। बाद में परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। सृष्टि की रचना के क्रम से पौलुस ने यह तर्क दिया कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के प्रति एक स्वाभाविक सम्बन्ध रखते हैं। सिर को ढकने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री, परमेश्वर के द्वारा उस भूमिका में एक चिन्ह था। समान वास्तविकता को बताने के लिए हो सकता है कि अन्य चिन्हों का भी प्रयोग किया गया हो।

जब पौलुस ने कहा कि पुरुष "परमेश्वर की महिमा है," तब ऊपरी तौर पर उसके कहने का अर्थ यह था कि उसका मानसिक, शारीरिक और आत्मिक जन परमेश्वर की महिमा को प्रकट करता है। इसके विपरीत स्त्री, अपने पति की महिमा है। प्रेरित यहाँ पर रुक गया। वह यहाँ पर यह सुझाव नहीं देता कि लिंग के आधार पर स्त्री, परमेश्वर के निकट नहीं आ सकती अथवा उसके पास अधिक निकटता में नहीं आ सकती अथवा परमेश्वर से उसने कम अथवा अधिक अनुग्रह पाया है।

आयतें 8, 9. साथ ही अन्य विवरण देने वाले शब्द **क्योंकि** (γάρ, *गर)* के साथ आरम्भ करते हुए पौलुस ने साक्ष्य प्रस्तुत करना जारी रखा कि स्त्री अपने पति की महिमा है (11:7)। उत्पत्ति में यह विवरण पुरुष की प्राथमिकता को प्रकट करता है। परमेश्वर ने पहले पुरुष को बनाया और फिर उसके लिए एक उचित साथी के रुप में स्त्री को बनाया (उत्पत्ति 2:7, 22)। सृष्टि की रचना में स्त्री के लिए जीवन का स्त्रोत पुरुष था। पौलुस ने यह तर्क दिया कि कुरिन्थ में सामाजिक नियमों की रीति के अनुसार सिर ढका जाना, परमेश्वर की रचना में पुरुष की प्राथमिकता का एक चिन्ह था।

उत्पत्ति के प्रति अपने निवेदन को जारी रखते हुए पौलुस ने 11:9 में विवरण दिया कि सिर का ढका जाना, सृष्टि की रचना के समय परमेश्वर के द्वारा स्थापित क्रम और उद्देश्यों को बताता था। स्त्री को इसलिए बनाया गया कि पुरुष को स्वयं के लिए एक उपयुक्त साथी मिले। जैसा कि पौलुस कहता है, **पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई है**। परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को एक ही समय में नहीं बनाया, न ही उसने स्त्री को पहले बनाया। सृष्टि की रचना का क्रम पुरुष और स्त्री के बीच के सम्बन्ध के विषय में बताता है। इस कारण जनसाधारण में जब पुरुष और स्त्री एक साथ आते थे तो यह उपयुक्त होता था कि सामाजिक अन्तर बनाए रखा जा सके। क्योंकि जब पुरुष अपना सिर ढकता था (11:7) अथवा कोई स्त्री उघाड़े सिर रहती थी (11:6) तो इसका अर्थ यह था कि परमेश्वर ने जिस प्रकार चीज़े स्थापित की थी उस प्रकार से उन्हें

लेकर चलने में मनुष्य असफल रहा।

आयत 10. जब पौलुस ने कहा, **इसी लिए** (διὰ τοῦτο, *डीआ टौटो*, अक्षरशः, "इस कारण ..."), वह ऊपरी तौर पर संकेत दे रहा था कि सृष्टि की रचना की घटना के आधार पर उसने अभी जो आग्रह किए उसी पर ये निष्कर्ष निकाले गए। अब भी, उत्पत्ति से जो बिन्दू वह लेता है वे पुरुष के प्रति स्त्री के समर्पण की ओर ध्यान केन्द्रित करने वाले दिखाई नहीं देते। वे मात्र पुरुष और स्त्री के बीच परम्मपरावादी सामाजिक अन्तर के लिए न्याय के रुप में दिखाई देते हैं; और वह न्याय यह है कि स्त्रियाँ प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करते समय अपना सिर ढकें जबकि पुरुष लोग ऐसा न करें। यहाँ, पहली बार सिर को ढकने की अपनी बातचीत में प्रेरित ने "अधिकार" (ἐξουσία, *एग्ज़ौसिआ)* शब्द का प्रयोग किया। NASB ऐसा कहती है, **स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।** NASB में जिस प्रकार से शब्दों को तिरछा करके दिया गया है उन्हें अनदेखा न किया जाए; "का एक चिन्ह" वाक्यांश अनुवादकों के द्वारा दिए गए। NIV1984 के पास "अधिकार का एक चिन्ह है।" RSV ने यूनानी पाठ्य के एक दरिद्र रुप से सत्यापित पठन को अपनाया है: "... एक स्त्री को चाहिए कि वह अपने सिर पर पर्दा रखे।"

एक प्रकार से इस पद को इस प्रकार से समझा जाए कि स्त्री जिस "अधिकार" के अन्तर्गत है, अर्थात उसके ऊपर पुरुष का "अधिकार" है और उस अधिकार के चिन्ह के रुप में पर्दे को समझा जाए। अन्य प्रकार से इस पद की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि किसी स्त्री के द्वारा सिर पर जो ढका जाता था वह प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करने के लिए उसके अधिकार का एक चिन्ह था अथवा उसके स्वयं के ऊपर उसके अधिकार को बताता था। पौलुस के द्वारा सृष्टि की रचना में पुरुष की प्राथमिकता के लिए आग्रह करना (11:8, 9) और उसके बाद की आयतों में "अधिकार" को कुछ नरम बना देने से (11:11, 12) पहले की व्याख्या को सहयोग मिलता है।

इस पद को पढ़ने के लिए, "स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे," ऐसा आवश्यक है कि यह समझा जाए कि ढकाव एक ऐसा चिन्ह है जो कि यहाँ पर बताए गए बिन्दू से एकदम अलग है। ढकाव को पुरुष की प्राथमिकता के चिन्ह के रुप में देखने के स्थान पर यह एक महिला के स्वयं के दावे के प्रति अधिकार का एक चिन्ह बन जाता है। विवरण दिए बिना इस प्रकार का स्वाभाविक स्थान परिवर्तन उचित नहीं है।

11:10 में प्रेरित के द्वारा प्रयोग में लिया गया शब्द "अधिकार" परम्परागत नहीं है। सामान्यतया, "अधिकार" का प्रयोग एक सक्रीय अर्थ में किया गया है जिसमें कुछ काम को करने का अधिकार शामिल है। फिर भी अगर आयत 10 और इससे पहले की आयतों अथवा इसके बाद की दो आयतों के बीच अगर कोई सम्बन्ध है तो यह समझना कठिन है कि महिला का स्वयं के ऊपर "अधिकार" होना किस प्रकार समस्या का कारण हो सकता है। किसी भी व्यक्ति के द्वारा ऐसा कहा जा सकता है कि सृष्टि की रचना पुरुष की प्राथमिकता को प्रकट करती है न

कि उसके "अधिकार" को प्रकट करती है; एक बार जब इस शब्द का परिचय दे दिया गया तो पाठक एकदम से यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता कि पौलुस ने उत्पत्ति से यह उद्धरण लिया जिससे कि यह बता सके कि महिला स्वयं के सिर पर अपना "अधिकार" रखती है। कोई भी जन इस प्रकार संदेह कर सकता है कि पुरुषों और स्त्रियों के बीच आधुनिक संवेदनशीलता इस प्रकार की व्याख्या के पीछे एक चलायमान शक्ति है न कि वह अर्थ है जो कि पौलुस और उसके पाठक समझे होंगे।

जैसा कि इस सन्दर्भ में धीरज के साथ अर्थ को समझने की आवश्यकता है, अनेक अनुवादों में यह NASB के समान है: "... स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।" पौलुस की चिन्ता का विषय यह नहीं है कि पुरुष किस प्रकार का "अधिकार" स्त्री पर रखता है अथवा इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाए। वह यह नहीं कह रहा था कि पुरुष, स्त्रियों पर नैतिक रुप से अथवा अन्य रुप में सर्वोच्च है। पाठक यह ध्यान रखें कि पौलुस स्त्रियों के विषय में बात कर रहा था जिन्हें आत्मा के द्वारा दिव्य रुप से सामर्थ दिया गया था। उन्हें इस कारण यह चाहिए कि वे उसी प्रकार प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करें जैसा कि पवित्र-आत्मा उन्हें प्रेरित करता है। फिर भी वे अब भी सिर को ढकने का वस्त्र अपने सिर पर रखें जिससे कि पुरुष और स्त्री के बीच सामाजिक अन्तर की स्वीकृति का प्रदर्शन किया जा सके।

पौलुस ने जब यह जोड़ा, **इसी लिए स्वर्गदूतों के कारण**, वह ऊपरी तौर पर परमेश्वर के उन सन्देशवाहकों अथवा स्त्रोतों के बारे में संकेत दे रहा था जो कि कलीसिया की आराधना की जाँच करते हैं। और इस विषय में अधिक विशेषता लाना असम्भव है। जैसा कि पौलुस ने कभी-कभी दुष्ट की आत्मिक शक्तियों के विषय में बताया, उसने उन्हें "स्वर्गदूत" नहीं कहा। बहुत कम अवसरों में ही उसने किसी स्वर्गदूत को एक दुष्ट स्त्रोत अथवा शैतान का एक दूत (2 कुरिन्थियों. 12:7) कहा अथवा दो अर्थों में "स्वर्गदूतों की पूजा" (कूलुस्सियों 2:18) के दो अर्थों में वर्णन किया। जब तक कि सन्दर्भ किसी अन्य प्रकार से माँग न करें, पाठक इन "स्वर्गदूतों" को परमेश्वर के हितैषी स्त्रोत व्यक्ति (देखें 1 कुरिन्थियों. 4:9; 6:3) के रुप में ही समझें।

आयत 11. सम्भव है कि कुछ लोगों ने पुरुषों के उस आत्मिक स्तर पर वाद-विवाद करने के लिए सृष्टि की रचना में पुरुषों की प्राथमिकता का प्रयोग करना चाहा जो कि स्त्रियों को नहीं मिली थी। पौलुस ने इसे स्वीकृति नहीं दी। पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के पूरक हैं और प्रभु की महिमा के लिए मिलकर काम करते हैं। पौलुस ने कहा कि **तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है।** दोनों ही पाप में गिरे हुए हैं; दोनों ही परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं। प्रेरित की चिन्ता का विषय यह था कि मसीही सामाजिक परम्पराओं का आदर कर रहे हैं। उसने ऐसे किसी पुरुष के लिए कोई मुकद्दमा नहीं रखा जो कि अपनी पत्नी और बच्चों पर कठोर रुप से शासन करता हो।

आयत 12. आरम्भ में **स्त्री, पुरुष से** थी; परन्तु स्वाभाविक जन्म में **मनुष्य**

इस संसार में **स्त्री के द्वारा** लाया गया। कोई भी एक लिंग का व्यक्ति विपरीत लिंग के व्यक्ति को तुच्छ न जाने। सब लोग परमेश्वर में एक हैं। गार्लैंड इसे इस प्रकार कहते हैं: "पुरुष और स्त्री की एक-दूसरे पर निर्भरता 12:21 में बताए गए कथन के समान लगती है: 'आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं।'"[15]

आयत 13. कुरिन्थ के लोगों ने स्वयं जैसा समझा था, उन सामाजिक नियमों के प्रति पौलुस आग्रह करता है (देखें 10:15)। कुरिन्थ के समाज में यह प्रथा थी कि जब वे प्रार्थना करें उस समय वे "उघाड़े सिर" (ἀκατακάλυπτον, *अकटकलुप्टन)* न हों। वे लोग स्वयं अपने लिए इस पर **विचार** करें: स्त्रियों के लिए सिर ढकना स्पष्ट रुप से आवश्यक था।

जब स्त्रियाँ, पुरुषों की अनुपस्थिति में आराधना करने के लिए एकत्रित हों तो उनका उद्देश्य पुरुषों के अधिकार को नीचा करना न हो, इस प्रकार का सुझाव पौलुस के मन में था। एक जनसाधारण आराधना सभा में जब कुरिन्थ की एक स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना करती है, जहाँ पर पुरुष और स्त्री दोनों ही शामिल हैं तो वह संस्कृति के द्वारा परिभाषित मर्यादा के अपमान का प्रदर्शन करती है जिसमें वह रहती है।

पौलुस ने पूछा, **क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना शोभा देता है?** सिर ढकना आवश्यक था। उस संस्कृति में, पुरुषों और स्त्रियों के बीच कुछ दूरी बनाए रखने की उपयुक्तता के द्वारा उनका व्यवहार परखा जाता था जब वे लोग जनसाधारण में एकत्रित होते थे। पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि जो कुछ उसने कहा वह अन्ततः यही है कि स्त्रियों को लक्ष्य बनाते हुए ही निर्देश दिए गए हैं। पृष्ठभुमि में पुरुषों के द्वारा सिर ढककर प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करने का अनुचित कार्य बताना भी है।

आयतें 14, 15. क्या **स्वाभाविक रीति यह नहीं सिखाती** कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिए अपमान है? स्पष्ट रुप से एक पुरुष के बाल स्त्री के बालों के समान ही बढ़ते हैं। एक प्रकार से "स्वाभाविक" रीति से सीखने के बारे में पौलुस इस प्रकार समझता है कि यह सामान्य रुप से परम्पराओं पर सहमत होना है। उसके विचार में, स्वाभाविक रीति की शिक्षा वह है जो कि मर्यादा के क्षेत्र के अन्तर्गत हो (11:13); किसी भी प्रकार की अनैतिक अथवा सामाजिक रुप से अस्वीकार्य चलन स्वाभाविक रीति के विरुद्ध था। कुछ उदाहरणों में मर्यादा से अधिक किए गए कार्य को समस्या का सामना करना होता था। उदाहरण के लिए रोमियो 1:26 में प्रेरित ने परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई नैतिकता के बारे में कहा और स्त्रियों ने भी "स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला," के बारे में कहा। "स्वाभाविक रीति" नैतिकता की शिक्षक थी, और लम्बे समय से अस्तित्व में रही सामाजिक परम्पराओं के समर्थन के लिए स्वाभाविक रीति के प्रति भी पौलुस ने आग्रह किया। उस समय कुरिन्थ के समाज में लम्बे बाल रखना पुरुष के लिए लज्जाजनक था। इस प्रकार का चलन स्वाभाविक रीति से विरोध में था और जहाँ तक कुरिन्थ के लोगों की

बात थी तो यह उनके अनुभव के विरोध में था। प्रेरित ने इस परम्परा का प्रयोग अपने तर्क को मज़बूत बनाने के लिए किया कि पुरुष के लिए यह अनुचित है कि वह सिर ढके प्रार्थना अथवा भविष्यद्वाणी करे। पुरुषों अथवा स्त्रियों को लम्बे अथवा छोटे बाल रखने की मर्यादा के बारे में संकेत देते हुए एक नए विषय की ओर ले जाने के लिए प्रेरित तीव्रता से आगे नहीं बढ़ रहा था। इसके स्थान पर वह पुरुषों के लिए छोटे बाल होना और स्त्रियों के बड़े बाल होने का अनुमान लगा रहा था जो कि विशेषता के साथ हों और स्त्रियों के लिए एक ढकाव अथवा पर्दे की मर्यादा का विवरण देने के लिए उसने ऐसा किया।

पुरुष के **लम्बे बाल उसके लिए अनादर का कारण** हैं यह दावा ऐतिहासिक सम्बन्ध रखता है। स्पार्टन योद्धा अपने लम्बे बालों के लिए अग्रदूत माने जाते थे; प्राचीन समय से उनकी परम्परा ने इस रुचि को आकर्षित किया क्योंकि यह नियम के विरुद्ध था।[16] सामान्यतया, यूनानी और रोमी लोग छोटे बाल रखते थे; स्त्रियाँ लम्बे बाल रखती थीं। पौलुस ने उस अभ्यास का प्रयोग, पुरुषों और स्त्रियों के द्वारा जनसाधारण में प्रार्थना करते समय सिर ढकने के विषय में अपनी शिक्षा को समर्थन देने के लिए किया। उसने यह भी कहा कि **बाल उस को ओढ़नी के लिए दिए गए हैं** (11:15)। प्रेरित यह वादविवाद नहीं कर रहा था कि पुरुषों अथवा स्त्रियों के आनुवांशिक श्रृंगार में जो कुछ भी है वह लम्बे बाल अथवा छोटे बालों का समर्थन करता है।

आयत 16. सिर ढकने और सामुदायिक आराधना में उन्हें लागू करने के लिए कुरिन्थ के लोगों की प्रशंसा में पौलुस ने बातचीत आरम्भ की (11:2)। ऐसा लगता है कि पौलुस ने जिस बात के लिए कलीसिया की सराहना की थी उसका पालन वे लोग कर रहे थे। मसीही मंडली में पुरुष उघाड़े सिर आराधना करने में असुविधाजनक महसूस कर रहे थे इस कारण सम्भव है कि प्रश्न उठे हों। अन्यजाति लोग रोमी ईश्वरों की आराधना के समय अपने सिर ढकते थे। हो सकता है कि स्त्रियों ने ऐसा सोचा हो कि जब आराधना मंडली में पुरुषों को सिर ढकना आवश्यक नहीं है तो यह उनके लिए भी आवश्यक नहीं है। पौलुस के शब्दों ने कलीसिया की रीति को मज़बूत किया और इन मसीही लोगों को उत्साहित किया कि वे वैसा ही करें जैसा कि वे करते आ रहे थे।

प्रेरित ने एक अन्य टिप्पणी भी रखी। कुरिन्थ की कलीसिया की शान्ति बहुत नाज़ुक थी। उसने भाइयों से कहा कि जो कोई व्यक्ति आराधना में पुरुषों और स्त्रियों की विशेष भूमिका को अनदेखा करते हैं वे सब स्थानों में परमेश्वर के प्रेरितों और कलीसियाओं का विरोध करते हैं। प्रत्येक मसीही व्यक्ति और कलीसियाओं के लिए यह आवश्यक था कि उनमें इतिहास और उनके चारों ओर के समुदाय को स्थिरता देने वाला प्रभाव हो। एक आज्ञाकारी सभा में एक झगड़ालू (φιλόνεικος, *फ़िलोनीकोस)* व्यक्ति के कारण भयंकर दुष्परिणाम देखने को मिल सकते हैं। अतः 11:16 में पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को याद दिलाया कि सिर ढकने के बारे में जो कुछ उसने कहा है वह प्रत्येक स्थान में **परमेश्वर की कलीसियाओं** के चलन को प्रतिबिम्बित करता है। कुरिन्थ में अथवा कहीं भी कोई

भी व्यक्ति दिव्य रुप से प्रमाणिक मिसाल (देखें 7:17) के विरोध में खड़ा न हो।

कुरिन्थ में सिर ढकना, जैसा कि सामाजिक परम्परा के द्वारा ठहराया गया था, मंडली में पुरुष और स्त्री के बीच के सम्बन्ध को प्रतिबिम्बित करता था। फिर भी असमानता के अन्य मामले कलीसिया में स्पष्ट रुप से देखे जा सकते थे। कुछ लोग अन्य लोगों से धनवान थे; और कुछ लोग यहूदी थे, जबकि अन्य लोग यूनानी अथवा रोमी थे। जो लोग उच्च स्तर रखते थे वे मसीही लोगों की मंडली में अपने चारों ओर की संस्कृति के सामाजिक अन्तर के लिए चलने के प्रति झुकाव रखते थे।

जब कलीसिया एक संगति भोज के लिए एकत्रित होती थी तो उनके स्तर का अन्तर स्पष्ट रुप से देखा जा सकता था। मसीह में ऐसा होना चाहिए था कि अमीर और गरीब, दास और स्वतंत्र, अथवा यहूदी और अन्यजाति ("यूनानी"; गलातियों 3:28) के बीच कोई अन्तर न रहे। सहभागी भोज इसलिए था कि यह मसीह में समुदाय के प्रति ज्ञान और एकता का समय हो परन्तु जो लोग उच्च स्तर के लोग थे वे निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति करने के प्रति अनिच्छित थे। उनके भोज इस प्रकार के फिजूलखर्च वाले उत्सव थे कि एक गरीब व्यक्ति के द्वारा इस प्रकार करना असम्भव के समान था। पौलुस ने इस समस्या का निवारण करना चाहा। गार्लैंड ने टिप्पणी की,

> कुरिन्थ की कलीसिया में एक समस्या यह थी कि यह रोमी सांस्कृतिक मूल्यों से भर गई जिसने क्रूस के ज्ञान का सामना करने का प्रयास किया ... पौलुस एक काम करने के लिए मन रखता है: कि यूनानी-रोमी प्रथाओं की ज़हरीली मिट्टी से कुरिन्थ के भोजों को उखाड़ दिया जाए और अन्य लोगों के लिए मसीह के प्रेमी बलिदान की पोषण करने वाली मिट्टी में उसे पुनः बो दिया जाए।[17]

एक समय में कलीसिया का इस प्रकार एक साथ होना विभाजन और झगड़ों का स्त्रोत बन गया। इसके लिए पौलुस उन्हें सराहता नहीं है।

फूट के कारण लज्जा (11:17-22)

[17]परन्तु यह आज्ञा देते हुए मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है। [18]क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो तो तुम में फूट होती है, और मैं इस पर कुछ-कुछ विश्वास भी करता हूँ। [19]क्योंकि दलबन्दी भी तुम में अवश्य होगी, इसलिए कि जो लोग तुम में खरे हैं वे प्रगट हो जाएँ। [20]अत: तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु-भोज खाने के लिए नहीं, [21]क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, इस प्रकार कोई तो भूखा रहता है और कोई मतवाला हो जाता है। [22]क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें

लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूँ? नहीं, मैं प्रशंसा नहीं करता।

आयत 17. इस आयत के सन्दर्भ में, समुच्चयबोधक अव्यय **परन्तु** *(δέ, डी)* एक विरोधसूचक कार्य है जो कि अन्तर अथवा विरोध प्रकट करता है। पाठक सम्भावित रुप से पौलुस से कठोर शब्दों की अपेक्षा करेंगे क्योंकि वह सिर ढकने के विषय पर बात कर रहा था। सिर ढकना और भोज में सहभागी होना आपस में जुड़े हुए थे क्योंकि ये दोनों गतिविधियाँ उस समय के अनुसार थीं जब कलीसिया एकत्रित ("जब तुम इकट्ठे होते हो [συνέρχεσθε, *सुनेर्खेस्थे]")* होती थी। आगे उसने कहा कि वह उन्हें नहीं सराहता क्योंकि जब कलीसिया इकट्ठी होती थी (συνέρχεσθε, *सुनेर्खेस्थे*, **इकट्ठा होना**), तो **वह भलाई के लिए नहीं परन्तु हानि के लिए** इकट्ठी होती थी। पौलुस के पत्रों में इस प्रकार की क्रिया का रुप मात्र 1 कुरिन्थियों में ही आता है: कलीसिया के सामान्य भोज के विषय में उसकी बातचीत में यह चार बार (11:17, 20, 33, 34) और दो बार उस समय आता है जब वह अन्य-भाषा के प्रयोग और गलत प्रयोग के बारे में भाइयों को उपदेश देता है (14:23, 26)। साथ ही प्रेरित ने ἐν ἐκκλησίᾳ (*एन इकलीसिआ,* अक्षरशः, "कलीसिया में") वाक्यांश का प्रयोग 1 कुरिन्थियों (11:18; 14:19, 28, 35) में अद्‌भुत तरीके से किया, जहाँ पर कहने का अर्थ है "सभा में"। साथ के पद लोगों की सभाओं की मंडली (जैसा कि प्रेरितों के काम 20:7 में देखने को मिलता है) का सुझाव देते हैं अथवा संकेत देते हैं, परन्तु नया नियम विस्तृत जानकारी नहीं देता कि जब कलीसिया एकत्रित होती थी तो वह क्या करती थी।

पौलुस ने प्रभु भोज के बारे में उसी समय बताया जब वह मूर्तियों को बलिदान करने वाले माँस (10:16-22) के बारे में बात कर रहा था। उसने उस विषय का परिचय फिर से यहाँ पर, संगति भोज के सन्दर्भ में दिया है। इन दोनों ही स्थानों में प्रभु भोज प्राथमिक शीर्षक नहीं है। अध्याय 10 में प्रेरित ने प्रभु भोज के बारे में उस समय बताया जब वह मूर्ति की मेज़ के आगे बैठने और मूर्ख के भोजन में सहभागी होने के बारे में चेतावनी दे रहा था। अध्याय 11 में उसने मसीह के निस्वार्थ प्रेम, जैसा कि यह रोटी और प्याले में सहभागी होने के चिन्ह के रुप में दिया और साथ ही सहभागी भोजों में स्वार्थ प्रकट करने वाले लोगों के साथ अन्तर प्रस्तुत किया।

प्रभु भोज को प्रभु ने स्थापित किया, यह पुनरावलोकन प्रेरित के तर्क का एक भाग था कि कुरिन्थ में चलन के रुप में जो सामान्य भोज था वह विभाजन की ओर जा रहा था और यह कोई एकता नहीं दिखा रहा था।

आयतें 18, 19. इकट्ठा होने की क्रिया को दोहराते हुए पौलुस ने पहले से अधिक स्पष्ट रुप से कहा कि वह **कलीसिया के रुप में** *(एन इकलीसिआ)* मंडली के उन मसीहियों के बारे में बता रहा था जो कि सप्ताह के पहले दिन (देखें प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2) इकट्ठे होते थे। यह वही दिन था जब चेलों ने प्रभु की कब्र को ख़ाली पाया (मत्ती 28:1; मरकुस 16:2; लूका 24:1; यूहन्ना 20:1).

नए नियम में, "प्रभु का दिन" (2 थिस्सलुनीकियों 2:2; 2 पतरस 3:10; देखें 1 कुरिन्थियों. 1:8) वह नहीं है जो कि "प्रभु के दिन" (प्रकाशितवाक्य 1:10) पद में दिया गया है। यूनानी वाक्यांश स्वयं बहुत अलग हैं। पूर्व के पद (ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, *ही हीमेरा कुरिऔ)* पुराने नियम के भविष्यद्वकताओं से इसे उधार लेते हैं। यह युग के अन्त को अर्थात उस दिन के विषय में बताता है जब प्रभु दूसरी बार न्याय करने के लिए (देखें इब्रानियों 9:28; 2 कुरिन्थियों 5:10) प्रकट होगा। "प्रभु के दिन" (ἡ κυριακὴ ἡμέρα, *ही कुरिआकी हीमेरा),* दूसरी तरफ़ सप्ताह के प्रथम दिन के विषय में बताता है जब मसीही लोग एकत्रित होते हैं। इस वाक्यांश का पूरा भाग प्रकाशितवाक्य 1:10 में देखा जा सकता है; परन्तु प्रेरित ने इसी विशेषण, "प्रभु के" (κυριακός, *कुरिआकोस),* का प्रयोग 1 कुरिन्थियों 11:20 में प्रभु भोज के लिए किया है।

पौलुस ने पत्र का आरम्भ, इन मसीहियों को विभिन्न शिक्षकों के प्रति और विशेष रुप से पौलुस और अपुल्लोस (1:10-15) के प्रति निष्ठा के आधार पर विभाजन के लिए डाँटते हुए किया। कुरिन्थ में अन्य विभाजन, श्रेणी की उच्चता के कारण उत्पन्न हो गया था। विभिन्न तरीकों से श्रेणी में विभाजन स्वयं को प्रकट करते थे परन्तु उन्हें उस समय स्पष्टता के साथ देखा जा सकता था जब कलीसिया सभा के भोज के लिए एकत्रित होती थी।

गर्ड थीसेन ने पौलुस के द्वारा 11:17-22 में सम्बोधित करने वाले विभाजनों के ऐसे बाध्य करने वाले साक्ष्य प्रस्तुत किए जो कि स्वार्थी लोगों के द्वारा सहभागी होने से मना करने की तुलना में अधिक हैं।[18] जो मसीही कलीसिया के एकत्रित होने के स्थान उपलब्ध करवाते थे उनके पास भौतिक साधन और उच्च सामाजिक स्थान था। जब वे अपना भोजन लेते थे उस समय वे कलीसिया के निम्न स्तर के तत्व से स्वयं को अलग कर लिया करते थे। वे तब ही खाते थे जब उनकी इच्छा होती अथवा जितना बहुमूल्य खाने की उनकी इच्छा होती थी। कलीसिया ने श्रेणी में अन्तर के भाग को स्वीकार कर लिया था जिसे विस्तृत संस्कृति में देखा जा सकता था परन्तु साथ ही यह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा छुड़ाए गए लोगों की संगति के लिए ज़हरीला भी था।

कुरिन्थ में सामाजिक विभाजन का जो सामान्य भोज ज़िम्मेदार था उसे प्रभु भोज की समानता प्रदान नहीं की जा सकती। उस स्मरण से अलग, कुरिन्थ के विश्वासी लोग समुदाय के भोज में सहभागी होते थे जो कि प्रभु भोज के पहले अथवा बाद में आया।[19] इस भोज को रखने के पीछे यह उद्देश्य था कि एकता को बढ़ावा दिया जा सके परन्तु यह विभाजन का एक चिन्ह बन गया था। आपस में धनवान और गरीब लोगों का अलग-अलग होना, मसीह की देह के द्वारा एकता के लिए किए जाने वाले दावे को झूठा ठहरा रहा था। इन कलीसियाई पारिवारिक भोजों के साथ इस प्रकार की फूट के विषय में पौलुस ने उपयुक्त रुप से उन्हीं स्त्रोतों से सुना जिन्होंने उसे अन्य विभाजनों के बारे में बताया था। जैसा कि कुरिन्थ की रीतियाँ असहनीय थी, इस मामले पर आगे बात करने से पहले प्रेरित यह कहते हुए उन पर अभियोग लगाने में नरम पड़ा कि वह सूचनाओं में

कुछ-कुछ विश्वास करता है।

प्रेरित आपस में विभाजनों की सराहना नहीं करता और कम-से-कम आपस में ऊपरी अन्तर लाने वाले मसीहियों की सराहना नहीं करता जो कि पौलुस के अनुसार एकता के प्रकाश में चरित्र से बाहर के लोग बन गए थे जैसा कि उसने 1:10 में बलपूर्वक आग्रह किया था। **तुम में फूट होती है**, का सन्दर्भ एक ध्यान देने वाला बिन्दू है। प्रथम दृष्टि में, 11:19 एक तरफ़ के स्वभाव को दिखाता है; यह इस प्रकार है मानो पौलुस, 11:18 में विघटन के कारण दी गई डाँट को योग्य बनाने की आवश्यकता महसूस कर रहा हो। इसे इस प्रकार पढ़ें कि प्रेरित, कुछ परिस्थितियों के अन्तर्गत "फूट" की सराहना कर था। 1:10 और 11:18 को ध्यान में रखते हुए, प्रेरित जिस विषय को प्रबल रुप से अस्वीकार कर दिया था उसे किन्हीं परिस्थितियों के अन्तर्गत सराहना करने के लिए अपने विषय से भटक क्यों रहा है? यह अच्छा रहेगा कि 11:19 को पढ़ा जाए। यह आयत 11:18, "और मैं इस पर कुछ-कुछ विश्वास भी करता हूँ," में अन्तिम वाक्यांश पर एक विवरण हो सकता है।

पौलुस कुछ-कुछ विश्वास करता था कि कलीसिया जब सामुदायिक भोज में सहभागी होती थी तब उनमें अभक्ति के विभाजन देखने को मिलते थे। वह यह देख पा रहा था कि परमेश्वर, कलीसिया को आकार दे रहा था; वह कुरिन्थ के विश्वासी लोगों के दृढ़ निश्चय की परख कर रहा था जिससे कि यह देखे कि क्या वे उसी समान जीवन जी रहे हैं जैसा यीशु ने सिखाया। **जो लोग खरे हैं वे प्रगट किए जाएँ** इसके लिए यह आवश्यक था कि भिन्नताएँ सामने आ जाएँ। कलीसिया में विभाजन की स्थिति के लिए कुरिन्थ के सब मसीही समान रुप से ज़िम्मेदार नहीं थे। जो लोग अपनी समृद्धि का दिखावा करते थे वे इस विभाजन का कारण थे (देखें 11:27)। फूट की आत्मा को स्थान देने के साथ ही जब वे लोग खा-पी रहे थे तो वे स्वयं पर और मसीह की सम्पूर्ण देह पर (11:29) परमेश्वर के न्याय को आमन्त्रित कर रहे थे। अनुचित रीति से ख़ाने और पीने के द्वारा वे देह की एकता को हानि पहुँचा रहे थे। किसी प्रकार की असहमति के बिना, सम्पूर्ण कलीसिया सम्भावित रुप से मसीही जीवन के लिए नियमों के रुप में सामाजिक रुप से उच्च वर्ग में स्वयं के पद को ऊँचा उठाने की रीति पर थे।

इस प्रकार के विभाजन कुरिन्थ में किए जा रहे थे जिस समय उनमें अधिक समृद्ध लोग स्वयं को व्यक्तिगत समूह में बाँट रहे थे जिन्हें भक्ति अथवा पवित्रता से कोई लेना-देना नहीं था। यह मात्र स्वार्थ और अभिमान के कारण था। जिस प्रकार के विभाजनों की बात यहाँ पर की जा रही है वे उन्हीं शक्तियों के द्वारा चलायमान नहीं हैं जैसा कि अध्याय 1 से 3 में देखते हैं। मात्र इसी बात में वे समानता रखते हैं कि उनकी उत्पत्ति घमण्ड और सर्वोच्चता के आचरण के साथ और भाइयों और बहनों के बीच बाधाएँ उत्पन्न करने के साथ है।

आयत 20. नया नियम में **प्रभु-भोज** वाक्यांश मात्र इसी आयत में देखने को मिलता है। जैसा कि, स्वामित्व का संकेत देने के लिए यूनानी वर्णलोप के चिन्ह का प्रयोग नहीं करता, इस कारण कोई भी व्यक्ति "प्रभु का," τοῦ κυρίου *(टो*

कुरिओ) जैसे स्वामित्व दिखाने वाले संकेत की अपेक्षा करेगा; परन्तु पौलुस ने असाधारण विशेषण κυριακός *(कुरिआकोस)* का प्रयोग किया जिसका अर्थ है "प्रभु से सम्बन्ध रखने वाला।"[20] नए नियम में यह विशेषण एक और स्थान में प्रकाशितवाख्य 1:10 में है जहाँ पर "प्रभु के दिन" के वाक्यांश का अनुवाद किया गया है। दो शब्द "भोज" और "दिन" से पूर्व "प्रभु से सम्बन्ध रखने वाला" अर्थ देने वाले विशेषण का प्रयोग यह विवरण देता है कि मसीह की ओर परिवर्तित हुए लोगों को पौलुस किस प्रकार सिखाता था कि वे प्रभु-भोज और सप्ताह के प्रथम दिन सहभागी होने का स्मरण समान रुप से रखें। सप्ताह के प्रथम दिन एकत्रित होना और प्रभु-भोज ऐसे दो बिन्दू हैं जो विशेष रुप में प्रभु से सम्बन्ध रखते हैं। इसे याद रखना और इसे बनाए रखना प्रत्येक के हृदय पर अंकित हो जाए। पौलुस ने एक वाक्यांश को जोड़ा जिसे अनेक अनुवादों ἐπὶ τὸ αὐτὸ *(एपी टू ओटो)* में अनदेखा कर दिया गया जिसका अर्थ है **एक-साथ**। यह वाक्यांश प्रेरितों के काम (देखें 1:15; 2:1, 44) के आरम्भिक अध्यायों में सामान्य रुप से है जो कि मसीहत के समूह की प्रकृति पर बल देता है। प्रभु के दिन कलीसिया का एक-साथ आना और प्रभु-भोज लेने में कलीसिया के सामान्य अंगीकार ने परमेश्वर के दाहिने ओर विराजमान स्वर्गीय मसीह (देखें 10:16; इब्रानियों 10:12) के साथ प्रत्येक मसीही व्यक्ति की वस्तु के बाँटे जाने और सहभागी होने को परिभाषित किया। वह विशेष दिन और भोज एक-साथ चलते हैं; ये दोनों ही प्रभु के जोश और मृत्यु पर उसकी विजय स्मरण करवाते हैं। अंगीकार, जीवन-शैली और संगति में लोगों को एक साथ लाने के लिए ये मूलभूत क्रियाएँ थी।

आयत 21. ऊपरी तौर पर, कुरिन्थ में प्रभु-भोज मात्र एक विधि बन कर रह गई थी। ऐसा लग रहा था कि कलीसिया ने यह मान लिया था कि जिस प्रकार वे प्रभु-भोज लेते हैं वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। पौलुस ने इसी प्रभाव में कहा, "जिस प्रकार का आचरण तुम करते हो उस प्रकार तुम्हारी विधियों में प्रभु भाग नहीं लेता। जिसे तुम 'प्रभु-भोज' कहते हो वह परमेश्वर को महिमा देने वाला नहीं है।"

पौलुस दो अलग-अलग बातों पर बातचीत कर रहा था। 11:21 में उसने प्रभु-भोज और इसके स्मरण के लिए और आराधना के लिए कलीसिया के द्वारा इस विधि में बार-बार भाग लेना और संगति भोज के बारे में कहा जिसमें **प्रत्येक जन स्वयं के भोज** के विषय में ही चिन्तित रहते हैं।[21] जिस प्रकार मसीही सामान्य भोज को देखते थे उससे सामाजिक-आर्थिक स्तर पर एक अन्तर उत्पन्न होता था जो कि उनके इस दावे को झूठा ठहराता था कि प्रभु-भोज में चिन्ह के रुप में एकता के साथ वे एक देह हैं। इन दोनों बिन्दूओं के बीच बातचीत करने के लिए और इसमें शामिल आचरण में अन्तर प्रकट करने के लिए, प्रेरित स्वतन्त्र रुप से घूमा। कुछ लोग भूखे ही रह जाते थे जबकि कुछ मतवाले हो जाते थे। पौलुस के शब्दों में उपस्थित जोश यह घोषणा करता है कि उनकी रीति, देह की एकता की एक भयानक अस्वीकृति थी।

वेयन ए मीक्स, सम्भावित रुप से यह निष्कर्ष देने में सही थे कि पौलुस के

उपदेशों को समझने का सबसे उत्तम तरीका यह है कि "आधारभूत विभाजन, (तुलनात्मक रुप से) धनवान और (तुलनात्मक रुप से) गरीब के बीच है।"[22] सभा के भोज के समय धनवान लोग अपने स्तर को प्रकट करने के दिखावे से भरे साक्ष्य के द्वारा गरीब को नीचा दिखाते थे। प्रभु-भोज में कुरिन्थ में मसीही लोग स्वयं के लिए घोषणा करते थे कि वे विश्वासी हैं जो कि परमेश्वर के सम्मुख एक समान हैं। सामान्य भोज के समय धनवान लोग स्वयं और उनसे कम स्तर के लोगों के बीच ऊपरी तौर से शारीरिक दूरी बना कर रखते थे; अपने साथी मसीहियों के विषय में लापरवाही के साथ जैसा उन्हें प्रिय लगता था (देखें 11:33) उसी समान वे लोग खाते और पीते थे।

आयत 22. यहाँ पर महत्वपूर्ण वाक्यांश **कि मैं प्रशंसा नहीं करता** (देखें 11:17) को कोष्ठक में डाला जा सकता है। यह कथन स्मरण कराता है कि जब पौलुस विवरण दिया था कि प्रभु-भोज किस प्रकार स्थापित किया गया (11:23-26) तो यह स्वयं में एक अन्त नहीं है। सामान्य भोज के समय सामाजिक अलगाव को लेकर वह चिन्तित था।

प्रभु-भोज (11:23-34)

चार सुसमाचारों का विवरण समाप्त करने के बाद नया नियम के पाठक सम्भावित रुप से निम्नलिखित दस्तावेज़ों में यीशु के दृष्टान्तों और कार्यों के बार-बार आने वाले सन्दर्भों को ढूँढने की अपेक्षा करेंगे। फिर भी प्रेरितों के काम, पत्रियाँ और प्रकाशितवाक्य, प्रभु के जीवन और सेवकाई के विषय में बहुत कम ही बताते हैं। सामान्यतया अधिक बल उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और पुनः वापस आने के लिए उसके वायदों में देखा जा सकता है। पौलुस ने विभिन्न अवसरों पर उन कथनों का प्रयोग किया जिन्हें प्रभु ने तैयार किया (1 कुरिन्थियों 7:10; 9:14), परन्तु प्रभु-भोज के विषय पर उसके द्वारा किए गए निवारण में उसके पत्रों में कहीं पर भी ऐसा नहीं है जिससे तुलना की जा सके।

प्रभु-भोज में, परमेश्वर अपने अनुग्रह को प्रकट करता है और अपनी सामर्थ के विषय में बताता है। रोटी और प्याला, मसीही विश्वास के आधारभूत अवसर को स्मरण दिलाता है। यह स्मरण रखा जाना चाहिए परन्तु यह उससे भी अधिक बढ़कर हैं। पौलुस के पत्र में हम पहले ही देख चुके हैं कि प्याला, मसीह के लहू में "सहभागिता" अथवा "संगति" है और रोटी, प्रभु की देह में "सहभागिता" अथवा "संगति" (10:16) है।

भोज को स्थापित किया जाना (11:23-26)

[23]क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैं ने तुम्हें भी पहुँचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली, [24]और धन्यवाद करके तोड़ी और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है: मेरे स्मरण के लिए यही किया

करो।" 25इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" 26क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

आयत 23. पौलुस ने अनेक विवादों के बीच जिस सुसमाचार का प्रचार किया था उसके विषय में वह कहता है, "क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुँचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला" (गलातियों 1:12)। प्रेरित ने अपना यह अधिकार किसी मनुष्य से प्राप्त नहीं किया - न ही यरुशलेम में प्रेरितों से ही प्राप्त किया। ठीक उसी समय उससे पहले के प्रेरितों के द्वारा पीछे छोड़ी जा चुकी परम्परा को उसने निरस्त नहीं किया (2:2), न ही उसने विश्वासी लोगों को यह सिखाया कि वे मसीही परम्पराओं को हल्का कर लें (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। जब पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि **यह बात मुझे प्रभु से पहुँची** तब यह बात उसने कुरिन्थ के लोगों तक **पहुँचा दी**, वह सम्भावित रुप से इस बात का दावा नहीं कर रहा था कि मसीह ने उसे किसी प्रकार का स्वतन्त्र प्रकाशन दिया था। प्रभु से जो प्रकाशन उसने पाया वह उसके पास उससे पहले के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहुँचा जिन्हें सुसमाचार की आधारभूत घटनाओं के विषय में आधिकारित रुप से बोलने के लिए आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई थी। प्रभु-भोज लेने के तरीके के विषय में पौलुस की इच्छा यह थी कि वह कुरिन्थ के लोगों को सुधारने से बढ़कर उनके लिए कुछ करे। उसकी चिन्ता का कारण यह था कि सामुदायिक भोज के लिए भोज को किस प्रकार लागू किया जाए।

सम्भावित रुप से प्रेरित ने अपनी आरम्भिक भेंट (देखें प्रेरितों के काम 18:1-11) में कुरिन्थ के लोगों को सिखाया कि वे प्रभु - भोज का पालन करें। जहाँ कहीं पौलुस ने कलीसियाओं की स्थापना की उसने मसीही लोगों को निर्देश दिए कि वे प्रभु के दिन में एकत्रित हों और प्रभु - भोज का पालन करें।पौलुस ने अन्य मिशनरी लोगों के साथ नए मसीही लोगों को बताया कि **यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली**। जब मसीही लोग रोटी तोड़ते हैं और प्याले में से पीते हैं तब वे यीशु के बलिदान को स्मरण करते हैं।

आयत 24, 25. केवल पौलुस और लूका ने ही **रोटी ली, ... और धन्यवाद करके तोड़ी** (εὐχαριστήσας, *यूखारिस्टेसास)* शब्दों का प्रयोग किया है।[23] मत्ती 26:26 और मरकुस 14:22 यह दर्शाता है कि उसने रोटी के लिए "आशीष" मांगी, यद्यपि इन दोनों शब्दों के अर्थ में अधिक अंतर नहीं है। जब एक मसीही अपने संग के विश्वासी के साथ कलीसिया में रोटी तोड़ने में भाग लेता है, तो वह मसीह की देह में शामिल होता है।

कुछ लोग "रूपांतरण" की शिक्षा देते हैं जिसका सिद्धांत यह है कि जब एक विश्वासी प्रभु भोज की रोटी लेता है तो वह शाब्दिक रूप से मसीह के देह में बदल जाती है। जिस तरह उसने दूसरे संदर्भ में "सच्ची दाखलता मैं हूँ" कहा

(यूहन्ना 15:1), इसके विपरीत, ठीक उसी तरह यीशु ने यह भी कहा, **"यह मेरी देह है।"** जैसे यीशु दाख का रूपक है, वैसे ही रोटी भी प्रतीकात्मक और आत्मिक रूप से, यीशु की देह को दर्शाती है।

रोटी और प्याले में भाग लेने के द्वारा विश्वासी लोग यीशु पर अपना सार्वजनिक विश्वास प्रकट करते हैं कि यीशु मानव जाति के लिए मरा। उसने हमारे पापों को उठा लिया। प्रभु भोज में भाग लेना आपसी सहभागिता है; यह एक दूसरे के साथ हिस्सा बांटना दर्शाता है। रोटी और प्याले में भाग लेने के द्वारा विश्वासी लोग एक दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं और सामूहिक रूप से वे प्रभु के साथ सहभागिता करते हैं। इस भोज के द्वारा, विश्वासी लोग अपने विश्वास का पुनर्निधारण करते हैं और ऊपर से सामर्थ प्राप्त करते हैं। प्रभु भोज स्मरण करने के बारे में है, लेकिन यह केवल संस्मरण ही नहीं है।

हफ़्ते प्रति हफ़्ते, विश्वासियों का मन क्रूस पर केंद्रित होता जाता है। दोनों आयतों में, वर्तमान काल, उद्धारकर्ता के संस्मरण और उसकी मृत्यु में भाग लेना दर्शाता है। पाँचवी सदी में, अगस्तीन ने लातिनी में एक वाक्यांश लिखा जिसका अनुवाद इस प्रकार है, "मैं तुझमें नहीं बदलूंगा, बल्कि तू मुझमें बदल जाएगा।"[24] जबकि हो सकता है कि अगस्तीन के मन में रूपांतरण जैसी कोई बात रही होगी, परंतु वह इस बात में सही था कि परमेश्वर, प्रभु भोज के द्वारा विश्वासियों को मसीह के समान बनने के लिए सामर्थ प्रदान करता है। जब लोग भोजन करते हैं तो यह उनका पोषण करता है और इसलिए वे बढ़ते जाते हैं; लेकिन जब कोई प्रभु भोज में भाग लेता है तो इसका परिवर्तन का प्रभाव अलग होता है। रोटी और प्याले में भाग लेने के द्वारा, अराधक मसीह में उस सीमा तक सहभागी होता है कि सहभागी का विश्वास कार्य करने लगता है, तब वह यीशु के समान बनने लग जाता है।

पौलुस ने जब प्रभु भोज से संबंधित **मेरे स्मरण के लिए यही किया करो** शब्दों का प्रयोग किया तो इसके कम से कम दो अर्थ निकाले जा सकते है। संभवतः प्रभु भोज में भाग लेने वालों से यीशु यह स्मरण करने के लिए कह रहा था कि उनके उद्धार के लिए उसने जो दाम चुकाया है वे उसका स्मरण करें। ऐसे स्थिति में, संस्मरण का परिणाम कृतज्ञ होना चाहिए। दूसरी संभावना यह है कि जो मसीही लोग प्रभु भोज में भाग लेते हैं वे परमेश्वर से निवेदन करते हैं कि वे उसके (मसीह के) क्रूस पर बलिदान को देखें, बल्कि वे उससे (परमेश्वर से) विनती करते हैं कि वह क्रूस को "स्मरण" करे और उनके अपराध क्षमा कर दे। इस अनुच्छेद का संदर्भ यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि कुरिंथुस के विश्वासियों का इस भोज में भाग लेने के तरीके पर प्रश्न उठाता है। एक मसीही होने के नाते, हमें उद्धार देने के लिए यीशु ने जो दाम चुकाए, उस पर हमें ध्यान करना चाहिए। हफ़्ते प्रति हफ़्ते, हमें क्रूस पर ध्यान करने की आवश्यकता है।

यीशु का लहू बहाने के द्वारा परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक नई वाचा बांधी है। नई वाचा और पुरानी वाचा के बीच, जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के साथ मूसा के द्वारा बांधा था, का विभेद किया जाना चाहिए। मत्ती

26:28 और मरकुस 14:24 में प्याले को "यह वाचा का मेरा वह लहू है" कहा गया है। लूका 22:20 कहता है, "यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नई वाचा है।" पौलुस की शब्दावली, लूका की शब्दावली के समान है, परंतु केवल 1 कुरिंथियों में ही प्याला लेकर उसने कहा **जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।** समानान्तर सुसमाचारों में ये शब्द रोटी तोड़ने के पश्चात् लिखे गए हैं न कि प्याले को आशीर्वाद देने के बाद।

चोट से लहू बहना एक हृदय विदारक दृश्य है जिसमें एक व्यक्ति जिनसे वह प्रेम करता है, और उनसे वह किस सीमा तक समर्पित है, की गम्भीरता दिखाती है। पुराने नियम में बहाए गए लहू की पवित्रता की गम्भीरता पाई जाती है। जब परमेश्वर ने नूह के साथ वाचा बांधी तो उसने आदेश दिया, "पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लहू समेत तुम न खाना" (उत्पत्ति 9:4)। जब मूसा ने "यहोवा के सब वचन लिख दिए" (निर्गमन 24:4), तब उसने बैलों को बलि करने का आदेश दिया। तब उसने "वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़कर सुनाया" और उसने लहू लेकर लोगों पर छिड़क दिया। उसके ये शब्द थे "देखो, यह उस वाचा का लहू है, जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है" (निर्गमन 24:7, 8)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने इसे एक सिद्धांत के रूप में माना "... और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं" (इब्रानियों 9:22)। यीशु का बहाया हुआ लहू उसके प्रेम की गवाही और गहराई का प्रमाण है। यह मसीहियों में लगातार पाप क्षमा, आशा, संगति और सामर्थ से परिपूर्ण होने का चिह्न है।

परमेश्वर अपने लोगों को पुराने नियम के एक सबसे प्रिय एंव प्रगाढ़ अवधारणा के द्वारा वाचा के बंधन में बांधता है। इब्रानी शब्द בְּרִית (*बेरित,* "वाचा") एक से अधिक दल के साथ संधि दर्शाता है, परंतु इसमें यह आवश्यक नहीं है कि दोनों दल एक समान हों। LXX में *बेरित* के लिए διαθήκη (*डियाथेके,* "वाचा") शब्द प्रयोग किया गया है जहाँ से यह शब्द, नए नियम के प्रयोग में लाया गया है। परमेश्वर ने नूह (उत्पत्ति 9:9), अब्राहम (उत्पत्ति 15:18), इस्राएल के लोग (निर्गमन 34:27), और दाऊद (2 शमूएल 23:5) के साथ वाचा बांधी। यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर ने जो विभिन्न वाचाएं लोगों के साथ बांधी थी वे मनुष्यों के हृदय पर लिखी एक "नई वाचा" के साथ बदल दी जाएंगी (यिर्मयाह 31:31-34; देखें इब्रानियों 8:7-13)। जब यीशु ने कहा कि प्याला "मेरे लहू में नई वाचा" है, तो वह परमेश्वर के स्व-प्रकाशन के एक लंबे इतिहास का ब्यौरा दे रहा था। उसने आगे इस बात की भी घोषणा की कि मसीही लोग परमेश्वर के अनुग्रह की नई वाचा के उत्तराधिकारी हैं (2 कुरिंथियों 3:6)।

आयत 26. प्रभु भोज, पीछे मुड़कर विश्वासियों के साथ संगति करने का स्मरण दिलाने के साथ ही, यह आगे को प्रभु के पुनरागमन् की ओर इंगित करता है। मसीही लोग, प्रभु भोज में शामिल होने के **द्वारा प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हैं।** कुरिंथुस वासी संभवतः जब भी इस रोटी में से खाते थे और प्याले में से पीते थे तो वे अपने आपको प्रभु की मृत्यु और उसके पुनरागमन्

के बारे में अक्षर प्रति अक्षर स्मरण दिलाते थे; परंतु संभवतः पौलुस ने "प्रचार करने" को अलंकारिक रूप से प्रयोग किया था। अर्थात, खाने और पीने की प्रक्रिया में, कुरिंथुस के मसीही लोग, जिस तरह आज अन्य लोग प्रभु भोज मनाते हैं, प्रतीकात्मक रूप से मसीह की बलिदानपूर्ण मृत्यु और उनका यह विश्वास कि मसीह दोबारा आ रहा है, को स्वीकार करना था।

प्रभु भोज मनाना (11:27-34)

[27]इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। [28]इसलिए मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। [29]क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। [30]इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। [31]यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते। [32]परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें। [33]इसलिए, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो तो एक दूसरे के लिए ठहरा करो। [34]यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खा ले, जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। शेष बातों को मैं आकर ठीक करूँगा।

आयत 27. वर्षों से मसीही इस आयत पर विचार करते रहे हैं। कुछ इस बात से डरते हैं कि कोई प्रभु भोज को **अनुचित रीति से** न ले। अपने पापों के बारे में अधिक सतर्क होने के कारण, कुछ लोगों ने हिचकिचाहट के साथ रोटी तोड़ी हो या फिर उन्होंने उसमें भाग लेने से इनकार कर दिया हो।

प्रभु भोज में अनुचित रीति से भाग लेने का अर्थ अपने पापों से पश्चाताप न किया गया हो, समझा गया होगा। कई मसीही ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को पूरी तरह न छोड़ा हो (देखें कुलुस्सियों 3:8)। इसके साथ ही, कई लोग प्रभु भोज में भाग लेते समय अपने मस्तिष्क को नियंत्रण में रखने के लिए संघर्ष करते हैं और इधर-उधर भ्रमण करते रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कोई भी प्रभु की मेज़ में शामिल होने के योग्य नहीं हैं। यदि पौलुस, मसीहियों को किसी भी तरीके से योग्य होने के लिए बुलावा देता है तो कोई भी रोटी तोड़ने और प्याले में से पीने का साहस नहीं करेगा।

यह आयत और बेहतर तब समझी जा सकती है जब **प्रभु की देह और लहू** का अवलोकन बारीकी से किया जाए, जो संभवतः क्रूस पर लटके प्रभु की देह हो सकती है या फिर यह कलीसिया हो सकती है जो मसीह की देह है। कलीसिया की तुलना "देह और लहू" से करना असमान्य है और न केवल इसकी तुलना मसीह की देह से की जाए। विभिन्न दलों (11:18) के विभाजन के परिदृश्य में पौलुस के लिए प्रभु भोज की चर्चा पूरे वाक्यांश में करना अपरिहार्य था। प्रेरित, प्रभु भोज की स्थापना के बारे में इसलिए लिख रहा था क्योंकि इसके द्वारा प्रभु

और उसके लोगों की एकता की घोषणा होती है। वह कुरिंथुस के विश्वासियों के मन में रोटी तोड़ने की निर्रथकता पर छाप छोड़ना चाहता था कि वे रोटी तोड़ने के द्वारा एकता की घोषणा तो करते हैं लेकिन संगति के भोज के समय सामाजिक, आर्थिक आधार पर अपना बंटवारा करते हैं (11:20, 21)।

प्रभु भोज के तत्व का इनकार कर इसमें भाग लेना मानो "अनुचित रीति से भाग" लेना जैसा है। जब मसीहियों ने अपने स्वार्थ और दूसरों के हितों का ध्यान न रखते हुए देह का बंटवारा किया, तो उन्होंने प्रभु भोज में अनुचित रीति से भाग लिया। जिस तरह से KJV में "Unworthily," (अनुचित रीति) लिखा है, तो यह मसीही लोगों के पाप क्षमा का वर्णन नहीं करता है बल्कि यह तो कुरिंथुस में प्रभु भोज में भाग लेने के तरीके का वर्णन करता है। कुरिंथुस वासी देह की एकता का उत्सव, रोटी और प्याले में भाग लेने के द्वारा मना रहे थे, तब उनका अलग-अलग दलों में बंटना, एक ओर प्रचुरता तो दूसरे ओर भूख-प्यास दर्शाता है। कलीसिया के बंटवारे ने इसके सदस्यों को "प्रभु की देह और लहू" का **अपराधी** ठहराया। गॉर्डन डी. फ़ी के अनुसार:

> यह निश्चित जान पड़ता है कि उनका प्रभु भोज के बारे में दर्शन अपर्याप्त था ... , संभवतः वे अधिक संतुष्ट नहीं थे क्योंकि वे उचित रूप से "मसीह पर विचार" नहीं कर रहे थे, या फिर उसके साथ उचित संगति करने में असफल थे, परंतु क्योंकि वे एक दूसरे पर दोषारोपण कर रहे थे तो इसके द्वारा उसकी मृत्यु का इनकार कर रहे थे ... ।[25]

आयत 28. यदि एक व्यक्ति अपनी सहानुभूति, अपने परिवार के प्रति उसका व्यवहार, या फिर वे सभी कारक जिसके सहयोग से वह पूर्ण व्यक्तित्व का अनुभव करता है, तो वह उस पर चिन्तन करके स्व-परीक्षण के द्वारा लाभ प्राप्त कर सकता है। हर एक व्यक्ति विशेष को मसीह के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता का परीक्षण करना चाहिए। इस प्रकार की विचारधारा प्रभु भोज में भाग लेते समय दिखाई देती है। कुरिंथुस की कलीसिया के लिए स्व-परीक्षण का अर्थ प्रभु भोज में "प्रभु की देह और लहू" के निहितार्थ पर विचार करना है या फिर कलीसिया की एकता पर विचार करना है।

पौलुस ने कुरिंथुस वासियों को उनके व्यवहारों का अवलोकन करने के लिए कहा: **इसलिए मनुष्य अपने आपको जाँच ले।** यदि एक मसीही को बीते हफ़्तों में अपने किए गए पाप स्मरण होता है तो यह प्रभु भोज का तिरस्कार करने का आह्वान नहीं है। यदि ऐसी ही बात है, तो कोई भी रोटी नहीं तोड़ सकेगा और न ही प्याले में से पी पाएगा। सबने पाप किया है (रोमियों 3:23); सभी प्रतिदिन पाप करते हैं। न ही पौलुस का यह अभिप्राय था, जब रोटी और प्याला वितरीत किया जाता है और उस समय यदि कोई अपनी दृष्टि मसीह की मृत्यु पर नहीं टिका सकता है तो उसको इसमें भाग नहीं लेना चाहिए। "अनुचित रीति" (11:27) में ये सभी बातें लागू नहीं होती है। इस संदर्भ में पौलुस यह निवेदन करता है कि इस भोज में एकता के प्रतीक को व्यवहारिक रूप से लागू किया

जाना चाहिए। हाँ, एक मसीही को अपने पापमय व्यवहार जाँचना चाहिए और अपने आपको बदलना भी चाहिए; परंतु यह हर समय सत्य नहीं है, जब वह प्रभु भोज में शामिल हो रहा हो। प्रभु भोज लेते समय, प्रभु की देह के प्रत्येक सदस्य को मसीह का क्रूस और उसके पाप क्षमा करने के लिए जो दाम मसीह ने चुकाया है, को स्मरण करते हुए अपने आपको जाँचना चाहिए। ये सभी बातें सत्य हैं, लेकिन कुरिंथुस की कलीसिया की समस्या उसकी एकता से संबंधित थी। मसीही प्रभु भोज में भाग ले रहे थे और देह की एकता की घोषणा कर रहे थे परंतु व्यवहारिक रूप से वे विभाजन को बढ़ावा दे रहे थे। उनके इस विभाजन के कारण वे प्रभु भोज में अनुचित रीति से भाग ले रहे थे। जब वे सामाजिक गुट के रूप में एकत्रित हो रहे थे और जिसे सबसे प्रभावशाली सदस्य बढ़ावा दे रहे थे तो इन भाइयों को इस मामले को देखने की आवश्यकता थी। पौलुस को विश्वास था कि इस प्रकार के व्यवहार की जाँच करने से विभाजन दूर हो जाएगा। जब देह की एकता की उचित घोषणा सामुदायिक भोज, प्रभु भोज और उसके बाद के भोजन के द्वारा की जाती है तो ये सब एक ही संदेश देते हैं।

देह की एकता का इनकार कर प्रभु भोज में भाग लेने का तात्पर्य अपने ऊपर खाने पीने के द्वारा दंड लाना है। जिस तरह कुरिंथुस वासी प्रभु भोज के साथ कर रहे थे तो ऐसे स्थिति में इसका इनकार करना संभव है, यही पाप दूसरे तरीके से भी संभव है। मसीही लोगों का किसी भी नैतिक सिद्धांत का सीधा अपमान करने का भी यही प्रभाव हो सकता है।

आयत 29. जो खाते और पीते हैं, उनके लिए मसीह का यह नमूना है कि वे प्रभु भोज को स्मरणीय बनाएं, मसीह और विश्वासियों के साथ संगति करें, और अनंत जीवन का आत्मविश्वासपूर्ण प्रतीक्षा करें। रोटी तोड़ने और प्याले में से पीते समय जो अपनी **देह को जाँचने** में असफल होते हैं वे प्रभु का न्याय (κρίμα, *क्रीमा)* अर्थात उसका दण्ड अपने ऊपर लाते हैं।

पौलुस का "देह" से क्या तात्पर्य है? बहुत से पाठक प्रेरित के भोज के विवरण पर अधिक ध्यान देते हैं और उस परिस्थिति का अनदेखा करते हैं जिसके कारण यह विवरण लिखा गया था। इस अनुच्छेद का विस्तृत परिदृश्य "देह" को परिभाषित करता है।

इस आयत में "देह" को क्रूस पर लटका हुआ मसीह की साक्षात देह समझा गया है। 11:27 में उल्लेखित प्रेरित की शिक्षा कि "अनुचित रीति" से इस रोटी और प्याले में भाग लेने को जब संयुक्त किया जाता है तो मसीही लोगों ने इसका यह अर्थ निकाला कि प्रभु भोज के समय क्रूस पर लटके मसीह की देह, जिसने हमारे पापों का दाम चुकाया, पर यदि कोई ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता है तो इसमें अनुचित रीति से भाग लेना है और ऐसा करने से वह अपने ऊपर दण्ड लाता है। KJV में जो अनुवाद प्रस्तुत किया गया है वह और भी दुविधा उत्पन्न करता है जिसकी मान्यता उत्तर कालिक यूनानी दस्तावेज़ में पाया जाता है: "क्योंकि जो प्रभु की देह को पहचाने बिना, *अनुचित रीति* से खाता और पीता है, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।" (बल दिया गया।) 11:29

में बेहत्तर और प्राचीन दस्तावेज़ों में "अनुचित रीति" नहीं दोहराया गया है, और न ही उसमें "प्रभु के" जैसा कोई अनुवाद पाया जाता है। जो खाते पीते समय "देह को उचित तरीके से नहीं जांचते हैं," पौलुस उनको चेतावनी देता है।

पौलुस ने "देह" को कलीसिया के रूपक के रूप में प्रयोग किया है। उसने कहा, "... हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं," (10:17); "... उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं" (12:12)। कुरिंथुस वासियों की असफलता बिना जांचे प्रभु भोज में शामिल होने में नहीं था; यह तो प्रभु की देह, कलीसिया को विभाजन के रूप में स्वीकार करने में था। इसमें क्रूस पर लटके प्रभु की वास्तविक देह को वे अनदेखा नहीं कर रहे थे; बल्कि वे तो कलीसिया की एकता बनाए रखने में असफल हो रहे थे।

आयत 30. तब पौलुस ने कहा, **इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।** अन्य स्थानों में पौलुस ने "सोने" को अलंकारिक रूप से "मृत्यु" के लिए प्रयोग किया है (15:51; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10)। "बहुत से सो भी गए" से पौलुस का यह तात्पर्य था कि कई कुरिंथुस के विश्वासी आत्मिक रूप से मृत थे। शेष उनमें "बहुत से निर्बल और रोगी थे।" जब धनी लोग रोटी और प्याले में भाग लेकर एकता का प्रदर्शन करते हैं और फिर निर्धनों से अलग होकर अपना अलग भोज करते हैं, तो ऐसी स्थिति में वे "अनुचित रीति से खाते और पीते" हैं (11:27)। "इस कारण," समस्या उनके ऊपर आ पड़ती है। पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि कुरिन्थ लोगों के दुखों का कारण उनके अधर्म हैं। कुछ लोगों को प्रभु ने अनुशासित किया है (11:32; देखें इब्रानियों 12:5-7), और कुछ दिखावा करने वाले, जिनको कभी-कभी कलीसिया ने स्वीकार भी किया था, मर गए थे।

आयत 31. अपनी चेतावनी पर बल देने के लिए प्रेरित ने विरोधाभास तथ्य (εἰ [*एई*] और ἄν [*आन*] का विरोधाभास तरीके) का प्रयोग किया है। यदि उन्होंने अपने आपको जाँचा होता, तो इस विषय पर पौलुस का न्याय करना अनावश्यक था। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि परमेश्वर भी उनको दण्ड न देता। फिर भी, वे अपने आपको नहीं जांच रहे थे। पौलुस ने लिखा, **यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते।** परमेश्वर ने उन मसीहियों को दण्ड दिया जिन्होंने अपने आपको नहीं जांचा। परमेश्वर की महिमा और उसका अनुग्रह पाने के लिए स्व-जांच और उसके पश्चात् पापों के लिए पश्चाताप करना आवश्यक था। पौलुस की यह शिक्षा थी कि कुरिंथुस के विश्वासी अपने चाल चलन पर ईमानदारी से ध्यान करे। प्रथम पुरूष सर्वनाम का प्रयोग इस दिशा की ओर उसके दृष्टिकोण में ढील देना दिखाता है। उनके साथ अपनी पहचान करने के पश्चात् उसने यह सुझाव दिया कि भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए स्व-जांच निरंतर चलने वाला मसीही जीवन का एक आवश्यक अंग है।

आयत 32. प्रथम पुरूष बहुवचन का प्रयोग करते हुए, प्रेरित ने लिखा, **परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है।** कुरिंथुस की कलीसिया में परमेश्वर के हस्तक्षेप के कारण कुछ लोग बीमार हो गए थे और कुछ सो भी गए

थे। परमेश्वर की कलीसिया जो भी अपनी इच्छा से करना चाहती थी वह उसको वैसा करने की अनुमति नहीं देता है। मसीही लोगों के पास यह मानने के लिए कुछ भी नहीं है कि वह स्वयं दूर खड़ा रहता है। KJV अनुवादकों ने यूनानी वाक्यांश ὑπὸ τοῦ κυρίου παιδευόμεθα, *ह्यूपो टू कूरिओ पाईडेयूओमेथा,* ("प्रभु हमारी ताड़ना करता है ...") अनुवाद किया है। इन शब्दों का क्रम इसका अर्थ इस प्रकार बताता है: "प्रभु को छोड़ और कोई मसीहियों की ताड़ना नहीं कर सकता है।"

अय्यूब ने यह समझ लिया था कि परमेश्वर की धार्मिकता मनुष्यों के समझ से परे है (देखें अय्यूब 38), लेकिन इतना स्पष्ट है: परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है वह उनको दण्ड देता है और उनकी ताड़ना भी करता है ताकि **वे संसार के साथ दोषी न ठहरें।** परमेश्वर का सारा न्याय का कार्य जगत के अंत के लिए नहीं रखा गया है। कुरिंथुस के विश्वासियों ने विभाजन करने वाली शक्ति को स्वीकार कर अपने आपको इस खतरे में डाल दिया था कि संभवतः परमेश्वर अपने सम्मुख से उनके दिए को हटा न ले (देखें प्रकाशितवाक्य 2:5)।

आयत 33. इस आयत में प्रेरित ने अपने कठोर शब्दों को हे **मेरे भाइयों** संबोधित कर थोड़ा नर्म किया। यहाँ भी, जब कुरिंथुस के विश्वासी आराधना के लिए एक साथ एकत्रित होते थे तो उसने विभाजन के विषय को नहीं छोड़ा। प्रभु भोज के बारे में उसका वार्ता यह था कि कलीसिया में लोग प्रभु भोज में भाग लेते समय इसका दुरूपयोग कर रहे थे। जब उसने उनके मध्य विभाजन और एकता की आवश्यकता पर शिक्षा देना समाप्त कर दिया था, तो पौलुस ने 11:17 में जो शिक्षा प्रारंभ की थी उसका सारांश उसने यहाँ प्रस्तुत किया है। परमेश्वर के लोग - चाहे धनवान या दरिद्र हों, चाहे यहूदी या अन्यजाति हों, स्वतंत्र या दास हों, पुरूष या स्त्री हों, चाहे जवान या बूढ़े हों - सबके पाप एक जैसे हैं और क्रूस पर जो अनुग्रह प्रगट हुआ है उसकी आवश्यकता है।

अलग-अलग दलों में विभाजन प्राथमिक मसीही विश्वास की अंगीकार का इनकार करना है। जब उन्होंने रोटी तोड़ी और प्याले में से पीया, और उसके बाद वे अलग-अलग हो गए ताकि हर एक जन "अपना भोजन खाए" (11:21) तो उन्होंने "प्रभु भोज" (11:20) वैसा नहीं लिया जैसा उन्हें लेना चाहिए था। स्पष्टतया वे प्रभु भोज में अनुचित रीति से भाग ले रहे थे।

पौलुस का यह आह्वान कि सामान्य भोज में **एक दूसरे के लिए ठहरें,** यह उनके लिए आत्मा की एकता और प्रेम के बंधन (इफिसियों 4:3) में बंधने के लिए बुलावा था। इस भोज के दौरान सामाजिक रूप से एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने के लिए वही सिद्धांत प्रयोग होता है जब वे प्रभु भोज में रोटी तोड़ते और प्याले में से पीते थे। यद्यपि, प्रभु भोज में भाग लेना और प्रभु के लोगों की एकता के लिए सामान्य भोज में भाग लेना, दो अलग-अलग घटनाएं थीं।

आयत 34. प्रभु भोज का उद्देश्य भूख मिटाना नहीं था। पौलुस ने लिखा, **यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खा ले, जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो।** मसीही लोग जब एकत्रित होते थे तो यह आवश्यक नहीं था कि वे

एक दूसरे के साथ भोजन करे; परंतु यदि उन्होंने ऐसा किया, तो इस भोजन के द्वारा मसीह की देह की एकता की पुष्टि होनी चाहिए, न कि इसका इनकार। यदि कोई मसीही दूसरे भाई या बहन के साथ भोजन नहीं बांटना चाहता था तो उनके लिए अपनी भूख मिटने के लिए उनके घर थे। यह चेतावनी यह दर्शाता है कि प्रभु भोज और प्रेम भोज में अंतर था। आवश्यकतानुसार प्रभु भोज विश्वास को दृढ़ करने की प्रक्रिया थी। यह बिना किसी समझौते के प्रभु के दिन की आराधना का एक भाग था। निःसंदेह, पौलुस जब वह स्वयं वहाँ पहुँचेगा तो इस विषय पर कुरिंथुस के विश्वासियों को समझाने के लिए उसके पास और भी बहुत कुछ होगा।

अनुप्रयोग

मसीही और संस्कार (11:1-16)

विशिष्ठ श्रोताओं से संबंधित विशिष्ठ अवसर व स्थान पर सिर ढकने का प्रश्न। कुरिंथुस वासियों के लिए, सिर ढांकना एक प्रतीक था। उनका इस प्रकार का प्रयोग सबसे महत्वपूर्ण अभिप्राय रखता है। प्रेरित ने पुरुषों से कलीसिया में आराधना और कलीसिया की जीवन में अगुओं की भूमिका निभाने की अपेक्षा की थी। जब एक महिला अपना सिर ऊंघाड़े रखती है या एक पुरूष अपना सिर ढांक कर रखता है, तो ऐसा अभ्यास कलीसिया के लिए परमेश्वर की अगुवेपन की योजना का अपमान होता है। इसके अलावा अतिरिक्त समस्या यह है कि मूर्तिपूजा में पुरूषों को अपने सिर ढांकना अनिवार्य था। पौलुस ने पुरूषों की अगुवेपन की संस्कृति को अपनाया था; उसने मूर्तिपूजकों के अभ्यासों जैसा प्रतीत होने वाले संस्कृति का तिरस्कार किया था।

कुरिंथुस के विश्वासियों को दिए गए पौलुस की शिक्षा से आधुनिक मसीही लोगों को निम्नलिखित शिक्षा मिलती है: (1) जब नैतिक रूप से संस्कृति निष्पक्ष या उदासीन होती है, तो विश्वासी ऐसी संस्कृति का सम्मान करते हैं। (2) एक सामाजिक संस्कृति जिस संदर्भ में उदीयमान होती है, उसको एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। एक मसीही का उस संस्कृति के प्रति आदर या निरादर उस संस्कृति के नैतिक या धार्मिक आधार पर निहितार्थ है। (3) एक सामाजिक संस्कृति का प्रतीकात्मक मूल्य होता है जो नम्रता, अनुशासित संसार का निर्माण करती है जिसमें मसीह की शिक्षा रूप लेती है और उन्नति करती है। (4) मसीही होने के नाते, हमें अपने नैतिक और धार्मिक मामलों को गम्भीरता पूर्वक लेना है जो कि अन्य से भिन्न है। व्यक्तिगत् अभिव्यक्ति के आधार पर सामाजिक संस्कृतियों का त्याग करना या किसी की स्वतंत्रता का दावा करना, मसीह के खातिर निर्बुद्ध या हानिकारक हो सकता है।

प्रभु भोज: संस्मरण से बढ़कर (11:17-34)

मसीही होने के कारण, प्रभु के दिन कलीसिया में सभा के लिए एकत्रति होना हमारे आत्मिक जीवन का केन्द्र बिंदु है। यह ऐसा समय होता है जब हम एक समुदाय के रूप में एकत्रित होकर अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं, एक दूसरे के संगति का आनंद उठाते हैं, एक दूसरे का उत्साह वर्धन करते हैं, और इससे बढ़कर हम परमेश्वर की आराधना करते हैं। विश्वासियों के पास इस प्रश्न "हफ़्ते के प्रथम दिन कलीसिया का एक साथ एकत्रित होने का क्या उद्देश्यहै?" का उत्तर पहले ही तैयार मिलना चाहिए। इस विषय पर दोनों पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

प्रथम, *मसीही हफ़्ते के प्रथम दिन एक दूसरे के विश्वास का अंगीकार और समर्थन तथा एक दूसरे को ईश्वरीय, सेवाभाव समर्पित जीवन के द्वारा उत्साहित करने के लिए एकत्रित होते हैं।* एकत्रित सभा का तात्पर्य संगति में जो कुछ भी आवश्यक हो उसके द्वारा एक दूसरे के साथ संगति का आनंद उठाना है। जब हम एक साथ होते हैं तो अति उन्मादित अनुभव करते हैं। इस कारण, इब्रानियों की पत्री के लेखक ने लिखा, "... और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें" (इब्रानियों 10:24, 25)।

इस सभा का सार मसीही केन्द्रित है; लेकिन इससे भी अधिक, हमारे एकत्रित होने का एक और महत्वपूर्ण पहलू भी है। *सभा में एकत्रित होने का तात्पर्य आराधना करना भी है।* परमेश्वर केन्द्रित सभा भी है जिसमें परमेश्वर का भय और समझबूझ के साथ आराधना करना केन्द्रीय स्थान है। हमें इस बात का भी भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर जिसकी हम आराधना करते हैं वह हमारी आराधना में बाधा डालने वाले अड़चनों को दूर करने में हमारी सहायता करेगा।

आराधना की दूसरी पहलू के समान, प्रभु भोज भी, एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। हर एक मसीही निम्न प्रश्न पूछकर लाभ कमा सकता है, "प्रभु भोज किसके बारे में है? जब हम सभा में एकत्रित होते हैं तो हमें रोटी और प्याले में क्यों भाग लेना है? क्या प्रभु भोज संगति के बारे में है या फिर क्या यह आराधना के बारे में है? आराधना और संगति किस प्रकार एक दूसरे से परस्पर संबंधित है?"

तीन प्रकार का साप्ताहिक अवलोकन है। परमेश्वर ने जो साप्ताहिक कार्यक्रम हमें प्रदान किया है, आइये हम उन पर ध्यान पूर्वक विचार करें।

पीछे मुड़कर देखें। अधिकांशतः, रोटी तोड़ना और प्याले में से पीना, पीछे मुड़कर देखने के लिए हमें प्रेरित करता है; वे हमारे स्मरण के लिए ठहराए गए हैं। विश्वासी लोग एक सामान्य विश्वास कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है, से बंधे हैं। वह परमेश्वर का मसीह है जो उसके दाहिने ओर शासन करता है। परमेश्वर ने यीशु में मानव रूप धारण किया। हम पढ़ते हैं,

क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (इब्रानियों 4:15, 16)।

परमेश्वर के लोग उनके इतिहास की भव्य घटनाओं के द्वारा परिभाषित किए जाते हैं। आसमान के मेघ धनुष (उत्पत्ति 9:13) से लेकर जुबली की तुरही फूँके जाने तक (लैव्यव्यवस्था 25:9-12), परमेश्वर ने सदैव अपने लोगों को विभिन्न प्रकार की इतिहास से घेरा हुआ है। जब परमेश्वर ने इस्राएल को अपनाया तो उसने उन्हें इस घटना को स्मरण रखने के लिए फसह का पर्व दिया। नौवें महीने में, मरूस्थल की चालीस वर्ष की यात्रा स्मरण रखने के लिए, इस्राएल देश के लोग तम्बू गाड़कर उसमें सोते थे। जब इस्राएलियों ने यर्दन नदी पार की थी तो यहोशू ने लोगों को कहा कि वे नदी के तल से बारह पत्थर उठाकर एक स्मृति चिह्न खड़ा करें (यहोशू 4:20, 21)। जो सबसे प्रिय घटना है उसको भी लोग भूल जाते जाते हैं - यहाँ तक कि वे अपने हितकारी को भी भूल जाते हैं। रोटी तोड़ने और प्याले में से पीने के द्वारा, मसीही इतिहास में पीछे मुड़कर देखते हैं; हम अपने समकालीन विश्वासियों और जो विश्वासी हम से पहले चले गए हैं, उनके साथ एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। हम स्मरण करते हैं। परमेश्वर ने अपनी वाचा को स्थिर किया है; उसने अपने आपको निम्न करके एक सामान्य मानव का रूप धारण किया (फिलिप्पियों 2:6, 7)। उसने उन लोगों के लिए दुःख उठाया और मारा गया जो पापों में डूबे हुए थे। प्रभु भोज में, मसीही लोग उसकी कुचली देह और बहाए गए लहू को स्मरण करते हैं।

चारों ओर देखना। रोटी तोड़ने के द्वारा मसीही न केवल पीछे मुड़कर देखते हैं; बल्कि हम अपने चारों ओर भी देखते हैं। प्रभु भोज, मसीह की देह में सहभागिता भी है। जिस रोटी और प्याले में हम भाग लेते हैं वह सामूहिक विश्वास का अंगीकार है। इस भोज के द्वारा, हम एक दूसरे को स्वीकार करते हैं और एक दूसरे का समर्थन करते हैं कि यीशु ही प्रभु है। पौलुस ने पूछा "वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?" (1 कुरिंथियों 10:16)। प्रभु भोज मसीह की जीवित देह के बारे में है, जो आत्मा के द्वारा स्थिर किया गया है और जो संसार में पाप के विरूद्ध संघर्ष करता है। यह घटना सहभागिता भी है - एक दूसरे के साथ सहभागिता और मसीह के साथ सहभागिता। एक विश्वासी होने के नाते हम रोटी तोड़ते हैं और प्याले में भाग लेते हैं; लेकिन हम इसे एक साथ एक ही समुदाय के रूप में करते हैं। जब भी कलीसिया प्रभु भोज में भाग लेती है, तो उसी तरह हम भी हमारे विश्वासी पूर्वजों के समान सदियों से इस घटना का स्मरण करते हैं।

प्रभु भोज में सहभागिता एकल कलीसिया तक सीमित नहीं है। क्षेत्र और समय से हटकर परमेश्वर के लोग, मसीह की कलीसिया के सदस्य, एक साथ बंधकर, क्षेत्रिय सीमा रेखा के पार एक दूसरे का समर्थन करते हैं। जब प्रशांत महासागर में कहीं पर प्रभु का दिन आरंभ होता है, तो विश्वासी लोग एकत्रित होकर आराधना करते हैं। प्रभु भोज पर वे सामान्य अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं: मसीह मानव जाति के पापों के लिए मारा गया और फिर जी उठा। प्रभु के दिन और प्रभु भोज के द्वारा विश्वासी लोग छुड़ाए हुए लोगों के बड़े झुंड में शामिल हो जाते हैं। प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा, जिस प्रकार यीशु ने हमारे लिए आदर्श छोड़ा उसी तरह हम भी यीशु के समान समान्य विश्वास अंगीकार कर और तब हम अनंत जीवन की आशा का प्रतीक्षा करते हैं। प्रभु भोज पीछे मुड़कर देखना है, लेकिन इसके साथ यह हमें अपने चारों ओर देखने के लिए भी प्रेरित करता है, जब हम एक दूसरे से सीखते हैं, एक दूसरे के साथ-साथ बढ़ते हैं, एक दूसरे को ताड़ना देते हैं, एक दूसरे को सहारा प्रदान करते हैं, तब हम एक दूसरे की देखभाल करते हैं।

मसीही होने का तात्पर्य अपने और प्रभु के बीच निर्णय लेना नहीं है। यह देह में सहभागिता है। यीशु और उसकी देह जो कलीसिया है, को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। प्रभु भोज देह में अनुभव किया जाने वाला अनुभव है।

आगे देखना। प्रभु भोज स्मरण करने और विश्वास का अंगीकार करने के साथ ही साथ, एक प्रतिज्ञा की गवाही भी है। यह स्वर्ग की ओर देखने की बुलाहट है। रोटी और प्याला मसीही लोगों को यह स्मरण दिलाती है कि प्रभु ने वापस आने की प्रतिज्ञा की है। पौलुस ने लिखा "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते रहो" (11:26)। धर्मनिर्पेक्ष संसार इस तथ्य को नहीं मानती है कि समय समाप्त हो रहा है। नास्तिक मानते हैं कि जब कोई उल्का पिण्ड इस धरती से टकरायेगा तो इसका अंत हो जाएगा या फिर मानव जाति इसे प्रमाणु हथियारों से नष्ट कर देंगे। अधर्मी लोगों के दृष्टि में, यह अकस्मात होगा और जो कुछ भी होगा, उससे अधिक फ़र्क नहीं पड़ेगा।

सुसमाचार का प्राथमिक संदेश यह है कि इतिहास समाप्ति की ओर बढ़ रहा है। इस धरती का भविष्य संयोग या परिस्थितियों पर आधारित नहीं है। जो प्रभु, यीशु नासरी के रूप में इस संसार में जीया, वही उद्धारकर्ता और न्यायी बनकर आयेगा। जब मसीही लोग प्रभु भोज में भाग लेते हैं, तो यह वह समय होता है जब वे पुनर्जीवित प्रभु, जो वापस आने वाला है, पर ध्यान करते हैं। विश्वासियों के लिए यह मानने का समय होता है कि यह संसार और समस्त मानवजाति समाप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। कलीसिया यह स्वीकार करती है कि परमेश्वर ही अपने संसार का स्वामी है।

उपसंहार: प्रभु भोज विश्वास का पुष्टिकरण है और भूतकाल की ओर दृष्टि डालने का समय है। यह मसीह और अन्य लोगों के साथ, जो हमारे जैसे विश्वास का अंगीकार करते हैं, सहभागिता है; तो इस प्रकार यह अपने चारों ओर दृष्टि

डालने का अवसर भी है। यह अपेक्षा और आशा की अभिव्यक्ति है, और इसलिए यह भविष्य की ओर देखना भी है। प्रभु भोज, जीवन, आशा, और समुदाय की पुष्टि की घटना है। यह इस बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है कि क्या था, क्या है और क्या होगा। यह हमारे मन को क्रूस की ओर आकर्षित करता है। यह एक ऐसा चिह्न है जो रोमियों के लिए तो पराजय का प्रतीक है लेकिन मसीह ने इसे हमारे लिए जय का प्रतीक बनाया। प्रभु भोज यह कहता है कि उद्धार पाए हुओं के साथ परमेश्वर ने एक बाचा बांधी है।

समाप्ति नोट्स

[1]ऐन्थोनी सी. थिसलटन, "रिअलाइज़्ड एस्केटोलॉजी ऐट कोरिन्थ," *न्यु टेस्टामेन्ट स्टडीज़* 24 (जुलाई 1978): 521. [2]रिचर्ड ई. ओस्टर, जुनियर., *1 कोरिन्थियन्स*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1995), 253-75; रिचर्ड ओस्टर, "वेन मैन वोर वेल्स टू वर्शिप: द हिस्टोरिकल कोन्टेक्स्ट ऑफ़ 1 कोरिन्थियन्स 11.4," *न्यु टेस्टामेन्ट स्टडीज़* 34 (अक्टूबर 1988): 481-505. [3]ओस्टर, *1 कोरिन्थियन्स*, 258. [4]जोसफ़ ए. फ़िज़मेयर, "अनदर लुक एट केफ़ाल इन 1 कोरिन्थियन्स 11.3," *न्यु टेस्टामेन्ट स्टडीज़* 35 (ओक्टोबर 1989): 510. वेयन ग्रूडेम, "डज़ केफ़ाल ('हेड') मीन 'सोर्स' और 'अथोरिटी ओवर' इन ग्रीक लिटरेचर? सर्वे ऑफ़ 2,336 एग्ज़ामपल्स," *ट्रिनिटी जर्नल*, न्यु सीरीज़ 6 (स्प्रिंग 1985): 3-59, में एक अच्छा विचार विमर्श उपलब्ध करवाया गया है। [5]वॉल्टर के. लेसे ने यह पाया कि मध्यम वर्गीय और निम्न वर्गीय महिलाएँ "लगभग सारा समय अपने घरों में ही रहती थीं" (वॉल्टर के. लेसे, "विमिन, पोज़िशन ऑफ़," इन *द ओक्सफ़ोर्ट क्लासिकल डिक्शनरी*, 2अंड ऐड. [ओक्सफ़ोर्ट: क्लेरेन्डन प्रेस, 1970], 1139). [6]जैक पी. लेविस के पास अन्य दृष्टिकोण था। उन्होंने यह तर्क दिया कि जब पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:4-16 में सिर ठकने के बारे में बात कर रहा था उस समय मंडली में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी और 11:17, 18 तक कलीसिया की मंडली भी नहीं आई थी। (जैक पी. लेविस, "द रोल ऑफ़ वुमेन इन द असेम्बली: एपिस्ल्स ऑफ़ पौल," *दीज़ थिंग्स आर रिटन: बाइबल लेक्चर्स प्रेज़ेनटिड ऐट हार्डिंग फ़ॉम 1952 टू 2012* में [सर्सी, आर्क.: ट्रुथ फ़ॉर टुडे मिशन स्कूल, 2013], 700-2.) [7]बेन विदरिंगटन तृतीय, *कन्फ़्लिक्ट एन्ड कम्युनिटी इन कोरिन्थ: अ सोशियो-रिटोरिकल कमेन्ट्री ऑन 1 एन्ड 2 कोरिन्थियन्स* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1995), 232. [8]ओस्टर, "वेन मेन वोर वेल्स," 493-97. गोर्डन डी. फ़ी को उस समय गलत समझा गया जब उसने यूनानी, रोमी और यहूदी संस्कृतियों में सिर ठकने के विषय में साक्ष्यों की कमी है। (गोर्डन डी. फ़ी, *द फ़र्स्ट एपिस्ल टू द कोरिन्थियन्स*, द न्यु इन्टरनेशनल कमेन्ट्री ओन द न्यु टेस्टामेन्ट [ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1987], 507-8.) [9]ओस्टर, "वेन मेन वोर वेल्स," 504. ओस्टर ने अगर यह प्रस्तुत किया होता कि पलिश्तीन में या फिर डाइसपोरा यहूदी सन्दर्भ यह सुझाता है कि महिलाएँ सिर ढके, तो उसका विषय और भी मज़बूत हो जाता। सम्भावित रुप से इफ़िसियों 5:23 में, पुरुष और स्त्री के सम्बन्धों पर बड़े प्रश्नों के अर्थ होंगे परन्तु यह आश्चर्यजनक है कि ओस्टर इस आयत को ध्यान से ही हटाना चाहता था। [10]एवरेट्ट फ़र्गुसन, "ऑफ़ वेल्स एन्ड वर्जिन्स: ग्रीक, रोमन, जूइश एन्ड अर्ली क्रिश्चियन प्रेक्टिस," *रेस्टोरेशन क्वार्टरली* 56 (फ़ोर्थ क्वार्टर 2014): 241.

[11]पूर्वोक्त. [12]विलियम एफ़. ओर्र एन्ड आर्थर वॉल्टर, *1 कोरिन्थियन्स*, द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, एन. वाई.: डबलडे एन्ड कम्पनी, 1976), 260. [13]हन्स कोन्ज़ेलमेन्न, *1 कोरिन्थियन्स*, ट्रान्स. जे. डब्ल्यु. लिचे, हर्मेनिया (फ़िलाडेलफ़िया: फ़ोर्टरेस प्रेस, 1975), 185. [14]डेविड ई. गार्लैंड, *1 कोरिन्थियन्स*, बेकर एग्ज़जेटिकल कमेन्ट्री ओन द न्यु टेस्टामेन्ट (ग्रान्ड

रेपिड्स, मिश.: बेकर अकेड्मिक, 2003), 520. [15]गार्लैंड, 529. [16]हेरोडोटस *पर्शियन वॉर्स* 1.82.7. [17]गार्लैंड, 534-35. [18]गर्ड थिसेन, *द सोशियल सेटिंग ऑफ़ पौलाइन क्रिश्चियनिटी: एसेज़ ओन कोरिन्थ*, ट्रान्स. एन्ड एड. जॉन एच. शट्ज़ (फ़िलादेलफ़िया: फ़ोर्ट्रेस प्रेस, 1982), 148-49. [19]रेमण्ड सी. केल्सी के अनुसार कुरिन्थ के लोग "प्रभु-भोज में जाने से पहले" (रेमण्ड सी. केल्सी, *फ़र्स्ट कोरिन्थियन्स*, द लिविंग वर्ड सीरीज़ [औस्टिन, टेक्स.: आर.बी. स्वीट कं.,1967], 51-52). सामान्य भोज में भाग लेते थे। 11:33: "...जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो तो एक दूसरे के लिए ठहरा करो," को लागू करते हुए एक भोज के बाद प्रभु-भोज में सहभागी होने का क्रम था। [20]आरम्भिक कलीसियाई पादरियों के लेखन के युग में शब्द पर सूचना जी. डब्ल्यु. एच. लेम्प, *अ पेट्रिस्टिक ग्रीक लेक्सिकन* (ओक्सफ़ोर्ड: क्लेरेन्डन प्रेस, 1961), 785-86 में दी गई।

[21]सम्भवतः कुरिन्थ के सामान्य भोज की तुलना में, यहूदा 12 और 2 पतरस 2:13 की "प्रेम सभाओं" से की जानी चाहिए। (इन सभाओं पर डूएन वार्डन, *1 एन्ड 2 पीटर एन्ड* जूड, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री [सर्सी, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेश्न्स, 2009], 385-87 में विचार-विमर्श किया गया है।) [22]वेयन ए. मीक्स, *द फ़र्स्ट अर्बन क्रिश्चियन्स: द सोशियल वर्ल्ड ऑफ़ द अपोस्ल पौल,* 2अंड एड. (न्यु हेवन, कोन्न.: याले युनिवर्सिटी, 2003), 68. [23]कुछ लोग *"यूखारिस्ट,"* शब्द प्रभु भोज से संबंधित बातों के लिए प्रयोग करते हैं, जो यूनानी भाषा से "धन्यवाद" या "कृतज्ञता" के लिए अंग्रेजी भाषा में प्रयोग किया गया है। [24]अगस्तीन *कनफ़ैसन्स* 7.10.16. [25]फ़ी, 557.